श्रीः

卐 卐

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्रीवेदमन्दिरग्रन्थमाला - चतुर्थं कुसुमम्

श्रीमद्-भगवद्-गीता

गीत्तायन

भास्स्य काब्ब्य का ल्यो आनँद

शिवनारायण शास्त्री

प्रकाशक

श्रीकुसुमेश्वर-महादेव-मन्दिरम्

सेवानगरम्, भिवानी-१२७०२१, हरियाणा, भारत

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पहला संस्करण : १९७३ वि० (२०१७ ई०)

प्रकासनाधिकार : © शिवनारायण शास्त्री

टाइप करणियाँ : उमाशंकर पाराशर (९२१५५४१६१२)
जैन चौक, भिवानी (हरियाणा)

SHRIMAD BHAGAVAD GEETA
Poetical Commentary in the Dialect of Haryana, India,
by SHIV NARAIN SHASTRI,
2149-50, Sector-13, Bhiwani, PIN 127021
(Haryana) INDIA.

पुण्य-स्मृतिः

१९१४ ई.
卐
१७.०६.७७

१९१५ ई.
卐
११.१२.९६

पण्डित श्रीनिवास शास्त्री - सीतादेवी

समर्पणम्

जन्म-मन्त्र-गिरां दानैरभ्यर्हिततमौ गुरू।
पितरौ श्रद्धया वन्दे, पादाम्बुज-रजः स्मरन्।।

सीतादेवी शुभा मेऽम्बा, सीतेवान्नप्रपूरणी।
षष्टिप्रायाणिवर्षाणि, स्नेहेनाश्वासयत् माम्।।

तातो मे श्रीनिवासस्तु, चत्वारिंशत् समा इह।
बोधयन् ज्ञानदानेन, कृपया मामपीपलत्।।

पुण्याप्यो हीदृशस्तातः, पुण्याप्या चेदृशी जनी।
पौत्ररूपा कृतिर्मेऽद्य, तत्पादेषु समर्प्यते।।

।। गीत्तायन मैँ सै के कित - ४-११ ।।

	प्रिस्ठ
पुण्यस्मृतिः, समर्पणम्	३
गीत्तायन मैँ सै के कित	४
गीत्तायन की नींम धरी या	**१२-५१**
१ मङ्गलाचरण	१२
२ कौरू पाँडुवाँ का इतहास	१४
३ युद्ध महाभारत क्यूँ होया	१७
४ ब्याक्ख्याता कै मन की पीड़ा	२२
५ कुलछेत्तर क्यूँ चुण्या लड़ण नै	२३
६ ग्यारा अर थी सात अच्छोण्ही सेना कट्ठी उत वैँ होई	२४
७ किस तह्रियाँ फौज खड़ी दोन्नूँ	२४
८ लड़नै की आचारसंहिता, त्यार करी दोन्नूँ पक्साँ नै	२५
९ पाँडुवाँ नै कौरुवाँ तैँ, न्यायपकस मैँ आणाँ बोल्ल्या	२५
१० ध्रितरास्टर नै जुध की खबराँ, पाणै की इच्छा प्रगट करी	२५
११ ध्रितरास्टर नै खबर देण का, ब्यास रिसी नै ब्यौँत बणाया	२५
१२ दस दिन ताईं खबर काढ़ कैँ, आग्लै नि आ खबर सुणाई	२६
१३ ध्रितरास्टर नै सञ्जै तैँ, खबर सुणाणी सरू करी	२६
१४ पहले दिन का हाल सुणाया	२७
१५ आतमघाती फौज्जाँ नै लख, अर्जन नै उत चिन्त्या होई	२७
१६ अर्जन की चिन्त्या का कारण	२८
१७ अर्जन अर ध्रितरास्टर की चिन्त्या मैँ था फरक घणाँ	२९
१८ गीत्ता जी का मुक्ख्य बिसै	२९
१९ गीत्ता का यो सार कह्या सै	३२
२० गीत्ता किस कै खात्तर बोल्ली	४१
२१ गीत्ता मैँ कितणे स्लोक कहे सैँ	४२
२२ गीत्ता मैँ सैँ स्लोक सात सै	४२
२३ किस अध्या मैँ सै अर कितणे	४२

२४ किसके कितणे स्लोक उरै सैँ	४३
२५ गीत्ता के स्लोक्काँ का ब्यौरा	४४
२६ मनसुख नै मन की बात कही	४५
२७ पढणाळयाँ तैँ दरखास करूँ	४७
२८ मैँ सूँ सार्थक इन कै कारण	४८
२९ ये सैँ मेरे बणे सहायक	४९
३० आठ टाबरी भ्याणी होई	५०
गीत्तायन	**१-२००**
के	**कित**
मङ्गलाचरण	प्रिस्ठ १
१. पहला अर्जन का बिसाद अद्ध्याय	**प्रिस्ठ २**

धृतरास्टर नै जुध का हाल पूच्छ्या **सलोक** १, सञ्जै नै खबर बताणी सरू करी २, दुर्योधन नै द्रोण तैँ फौज्जाँ की स्थिति समझाई ३, पाण्डुवाँ के खास जोधे ४-६, म्हारी सेना के जोधे ७-९, दोन्नूँ फौज्जाँ की तुलना १०, हुकम द्रोण नै दुर्योधन का ११, भीसम जी नै सङ्ख बजाया १२, मारू बाज्जे बाज्जण लाग्गे १३, पाण्डु सैण नै सङ्ख बजाए १४-१८, कौरु सैण पै असर पड़्या के १९, अर्जन किरसण तैँ बोल्ल्या २०-२३, किरसण अर्जन तैँ बोल्ल्या २४-२५, उत देक्खे आपणे सारे २६-२७, दया भाव तैँ दुखिया बोल्ल्या २८-३७, लड़नै मैँ सै भोत बुराई ३८-४४, भोत गलत हाम् कर ह्वे इब साँ ४५, मन्नै मारैँ, तो बी आच्छा ४६, गेर धनुस जा पाच्छै बैठ्ठ्या ४७ ।। १ ।।

२. दूसरा ग्यान अर करमयोग अद्ध्याय **प्रिस्ठ १२**

किरसण नै अर्जन समझाया १-३, अर्जन नै आप्णी सोच बताई ४-६, रस्ता मन्नै काढ़ किसन तैँ ७-८, 'नहीँ लड़ूँ गा' बोल्ल्या अर्जन ९, किरसण नै अर्जन हँस कैँ टाळ्या १०-११, आतमग्यान दिया समझाया १२-३०, धरम आपणा याद दुवाया ३१-३२, अपजस का डर बी खोल कह्या ३३-३६, लड़नै मैँ सै तन्नै फायदा ३७-३८,

करमयोग की राह बताई ३९-५२, आप्णी बुद्धी नै स्थिर कर ले ५३, अर्जन बूज्झै स्थिर बुद्धी के लच्छण ५४, किरसण नै वो समझाया ५५-५८, बिसयाँ मैँ मन लाग्ग्या ह्वै सै ५९, इन्द्री खौंच्चैं आप्णी कान्हीं ६०-६१, ध्याँ कैँ बिसयाँ नै हानी ६२-६३, इन्द्री बस मैँ राक्खण के फाय्दे ६४-७२, अध्याय कै अन्त मैँ मङ्गळ।। २।।

३. तीसरा करमयोग अद्ध्याय प्रिस्ठ २८

अद्ध्याय मङ्गलम् प्रिस्ठ २८, ग्यान करम मैँ तैँ एक बता १-२, करमयोग फेर कह्या किसन नै ३-८, यग की महिमा ९-१६, आतमरति की परसंसा १७-१८, करमयोग की परसंसा १९-२०, आच्छै कै पाच्छै दुनियाँ चाल्लै २१, लाग्या करमाँ मैँ मैँ रहँदा २२-२४, ग्यान्नी अग्यानी बण करम करै २५, करममार्ग तैँ नाँ भटकावै २६-२९, ईस्स्वर पै तज करमाँ नै लड़ ३०, यो मान्नण नाँ मान्नण का फळ ३१-३३, राग द्वेस कै बस नाँ आवै ३४, आपणाँ कर्तब सब तैँ आच्छा ३५, पाप करण मैँ कोण गेरदा? ३६, इच्छा गुस्सा पाप करावैँ ३७-३९, चाहत गुस्सा कित सै रहँदे ४०, इन नै तैँ मार गेर दे ४१-४३।। ३।।

४. चोत्था ग्यान अर करम सन्न्यास योग अद्ध्याय प्रिस्ठ ३८

करमयोग कहण का इतिहास १-३, पहल्याँ क्यूक्कर तन्नै बोल्ल्या? ४, जाम्म्या पहल्याँ बी था मैँ ५-६, धरमहाण पै परगट होऊँ ७, जलम इसा जाणन का फाय्दा ९-१०, मेँरै रस्तै चाल्लैं माणस ११-१२, सुभा करम तैँ बरण च्यार सैँ १३, करमाँ तैँ नाँ कोण बँधै सै १४, कर्मां की महिमा १५-२२, करमयोग तो यग्ग्य जिसा सै २३, यग्ग्याँ के भेद २४-२९½, यग की महिमा ३०-३२, ग्यानयग्ग्य सै सब तैँ आच्छा ३३, ग्यान पाण के तीन तरीक्के ३४, ग्यान की महिमा ३५-३८, स्रद्धालू नै ग्यान मिलै सै ३९, सङ्कालू की निन्दा ४०, उपसंहार ४१-४२।। ४।।

५. पाँचमाँ करमसन्न्यास-करमयोग अद्ध्याय प्रिस्ठ ४८

करमसन्न्यास करमयोग मैँ, सै के आच्छा १, करमयोग सै इन

मैँ आच्छा २-१७, समदर्सी कोण हो सै १८-२१, भोग्गाँ मैँ नाँ रमणाँ चहिये २२, योगी की महिमा २३-२६, ध्यान की प्रक्रिया अर फळ २७, बन्धन तैँ छूट्टया कोण हो सै २८, इस साधना का फळ २९।। ५।।

६. छठा आतमसंयोग योग अद्ध्याय प्रिस्ठ ५५

करमयोगी की महिमा १-३, करमयोग पै चढ्यै का लच्छण ४, आप्पा आप्णा बन्धु शत्रु सै ५-७, समदर्सी योगी हो सै ८-९, योगसाधना की प्रक्रिया १०-१४, योग साधना का फळ १५, योगसाधना कै योग्य कोण नाँ १६, किस के दुखड़े योग मिटावै १७, योगी का लच्छण १८-२६, योगसाधना का फळ २७-२८, योगी का स्वरूप अर महिमा २९-३२, चञ्चल मन नै कठिन साधणाँ ३३-३४, मन साद्धण के दो उपाय ३५-३६, भटक्यै योगी की के गत होवै? ३७-३९, आच्छै रस्तै चाल्लणियै का, बुरा कदे नाँ होवै सै ४०, भटक्यै योगी की या गति होवै ४१-४५, योगी की परसंसा ४६-४७।। ६।।

७. सातमाँ ग्यान-बिग्ग्यान-योग अद्ध्याय प्रिस्ठ ६६

किरसण नै आग्गै बात बढाई १-२, बिरले करदे ग्यानसाधना ३, आठ तह्वाँ की मेरी प्रक्रिती ४, इस तैँ ऊँच्ची प्रक्रिति जीव सै ५, सारी स्रिस्टी बणी इन्हैँ तैँ ६, परमात्मा तैं ऊप्पर नाँ कुछ ७, चौदा रूप्पाँ मैँ मैँ सूँ ८-११, त्रिगुणाँ तैँ जो सैँ यो मत्तैँ १२, तीन गुणाँ नै जग यो मोह्या १३, मन्नै आ क्यैँ इन तैँ छूट्टैँ १४, दुस्कर्मी नाँ मन्नै पावैँ १५, भगत जगत् मैँ च्यार तह्वाँ के १६, उन मैँ प्यारा ग्यानी मन्नै १७-१९, किमे चाहँदे भगत ओर के, उन का बी मैँ भला करूँ सूँ २०-२३, नाँसमझे मन्नै परगट समझैँ २४, नहीं प्रगट मैँ सब नै होन्दा २५, ना सै जाणै मन्नै कोए २६, चाहत द्वेस भरम मैँ गेरैँ २७, पापरहित हो छूट मोह तैँ, माणस करदा मेरी भगती २८-३०।। ७।।

८. आठमाँ बुद्धियोग अद्ध्याय प्रिस्ठ ७४

सात सुवाल करे अर्जन नै १-२, उन का उत्तर दिया किसन

नै ३-४, अन्त समै का भाव परबल सै ५-६, सदा सुमिरदा मन्नै लड़ तैँ ७, अन्त समै के करणाँ चहिये ८-१०, 'ॐ' अक्षर का महतव ११-१३, परमातमा कै सुमिरण का फळ १४-१६, ब्रह्मा के दिन अर रात्री १७-१९, अव्यक्त प्रक्रिति तैँ ऊप्पर कुछ सै २०-२१, भगती तैँ वो पाया जा सै २२, मरण बखत सैँ दो तह्रियाँ के २३-२७, इस ग्यान का महतव २८।। ८।।

९. नोम्माँ ग्यान बिग्ग्यान योग अद्ध्याय प्रिस्ठ ८२

ग्यान बिग्ग्यान योग की प्रस्तावना १-२, सर्धा बिन माणस दुनियाँ मैँ भरमै ३, ईस्स्वर नै सै दुनियाँ सिरजी ४-१०, अग्ग्यान मारग ११-१२, भगती मारग के साधक १३-१४, ग्यान यग्ग्य तैँ दूज्जे पूज्जैँ १५, सब कुछ परमात्मा ए सै १६-१९, तीन बेद के जाणनियैँ, आन्दे जान्दे जग मैँ रहँदे २०-२१, भगताँ का मैँ बोझ उठाऊँ २२, भगत ओर के बी मेँरै ए सैँ २३-२५, दिया भगति तैँ मैँ वो पाऊँ २६, किमे करै, कर अर्पित मन्नै २७-२८, सब सैँ मन्नै एक जिसे ए २९, उद्धार करूँ मैँ पाप्पी का बी ३०-३३, तैँ मेरी सरणै आ ज्या ३४।। ९।।

१०. दसमाँ बिभूति योग अद्ध्याय प्रिस्ठ ९२

किरसण नै आग्गै बात बढाई १, मेरा जलम न कोए जाणै २, जो जाणै पाप्पाँ तैँ छूट्टै ३, प्राणी मैँ ईस्स्वर की बीस बिभूत्ती ४-५, परमात्मा की सैँ ओर बिभूति ६, बिभूति जाणन की महिमा ७-११, भगवान की परसंसा १२-१४, खास बिभूत्ती बताण की प्राथना १५-१८, कही तिरास्सी खास बिभूत्ती १९-३८½, मेँरै बिन किम्मे नाँ सै ३९, उपसंहार ४०-४२।। १०।।

११. ग्याह्रमाँ बिराट रूप दर्सन अद्ध्याय प्रिस्ठ १०७

दिखा आपणाँ रूप ईसरी १-४, अर्जन, मेँरै रूप देख तैँ ५-७, दिब्ब्य द्रिस्टि देऊँ तन्नै ८, दिब्ब्य रूप का मोट्टा बरणन ९-१२, साब्बत दुनियाँ उत देक्खी १३, अचरज मैँ भर अर्जन बोल्ल्या १४, मन्नै देक्ख्या

रूप अजूब्बा १५-३०, अर्जन पूच्छै आप कोण सो? ३१, काळ बली सूँ सब नै गसदा ३२, तैँ तो सिरफ निमित ए बण ज्या ३३-३४, अर्जन नै उसकी करी बन्दगी ३५-४०, माफ्फी माँग्गी किरसण तैँ ४१-४४, वो ए मन्नै रूप दिखा तैँ ४५-४६, खुस हो मन्नै रूप दिखाया ४७, पुण्य्याँ तैँ बी दिक्खै नाँ यो ४८, वो ए मेरा रूप देख तैँ ४९, किरसण नै वो ए रूप दिखाया ५०, माणस तन मैँ देख तन्नै, आप्पै मैँ सूँ मैँ आया ५१, रूप इसा यो भगती तैँ दीक्खै ५२-५५।। ११।।

१२. बाह्रमाँ भक्ति योग अद्ध्याय प्रिस्ठ १२१

कोण भगत सै सब तैँ आच्छे? १, मेँरै मैँ ए लाग्गे रहँदे, सब तैँ आच्छे लाग्गैँ मन्नै २-३, वैँ पावैँ सैँ मन्नै ४-७, मेँरै मैँ तैँ मन नै ला ले ८-१२, मन्नै प्यारे इकताळीस भगत १३-२०।। १२।।

१३. तेह्रमाँ क्सेत्र क्सेत्रग्य नै जाणनियै का अद्ध्याय प्रिस्ठ १२७

क्सेत्र क्सेत्रग्य ये दो हौँ सैँ १-२, क्सेत्र का बर्णन ३-६, ग्यान्नी की सैँ बीस निसान्नी ७-११, उण्तीस निसान्नी ग्यान बिसै की १२-१७, प्रकरण का उपसंहार १८, प्रक्रिति पुरुस के गुण किस तह्रियाँ के १९-२२, प्रक्रिति पुरुस नै जाणन का फळ २३,आतमग्यान के साधन २४-२५, क्सेत्र क्सेत्रग्य तैँ सब उत्पन्न २६, ईस्स्वरदर्सन की करी बडाई २७-३०, आतमा नाँ सै लिपत देह मैँ ३१-३२, ईस्स्वर करदा जगत् प्रकासित ३३, यो जाणैँ, पावैँ परम गती ३४।। १३।।

१४. चौधमाँ तीन गुणाँ का सरूप अद्ध्याय प्रिस्ठ १३९

परम ग्यान की करी बडाई १-२, महत् प्रक्रिति तैँ जलम सबै का ३-४, सत्, रज तम सैँ तीन जेवड़ी ५, आत्मा नै गुण क्यूक्कर बान्धैँ ६-९, ठाड्ढा गुण सै दो नै दाब्बै १०, गुण बढणै का के लच्छण ११-१३, मरण समै गुणब्रिद्धी का फळ १४-१५, तीन गुणाँ के करमाँ के फळ १६-१७, किस गुण तैँ माणस की के गति १८, कोण बणै ब्रह्मरूप सै १९-२०, तीन सुवाल करे अर्जन नै २१, जबाब दिये

किरसण जी नै २२-२६, टिक्या सबै कुछ जिस पै, मैँ वो २७।। १४।।

१५. पन्धरमाँ परसोतम योग अद्ध्याय प्रिस्ठ १४८

ब्रिक्स जिसी सै या दुनियाँ १, रूपक की प्रसङ्गसङ्गति २-५, परम धाम की कही खासियत ६, ईस्स्वर का ए अंस जीव सै ७, इन्द्रियसँग सै देह बदलदा ८, उन का मालिक बण बिसय भोगदा ९, मोह्या नाँ देक्खै आत्मा नै १०, योगी देक्खैं आपणै मैँ ए ११, आतमतेज जगत् नै धारै १२-१५, ततव जगत् मैँ क्सर अर अक्सर १६, क्सर अक्सर तैँ ऊप्पर परमात्मा १७-१९, उपसंहार २०।। १५।।

१६. सोळ्हमाँ दैवी अर आसुरी प्रव्रित्ती अद्ध्याय प्रिस्ठ १५४

दैवी गुण छब्बीस मनुख के १-३, असुर सुभा के छह लक्खण ४, देव असुर सुभावाँ का फळ ५, दो तह्वियाँ की व्रित्ति जगत् मैँ ६, असुर प्रव्रित्ती के लच्छण ७-२०, नरक जाण के तीन दुरज्जे २१, माणस नै खुद की खोज करी २१, इन तैँ बच कै परम गती हो २२, सास्त्रबिधी तैँ चलणाँ चहिये २३, अर्जन तैँ दी सल्हा किसन नै २४।। १६।।

१७. सत्हरमाँ तीन तह्वाँ की सर्धा अद्ध्याय प्रिस्ठ १६४

सिरफ स्रधालु का के होगा? १, सर्धा हो सै तीन तह्वाँ की २, सर्धा का महत्त्व ३, तीन तह्वाँ की सर्धा के देवते ४, आसुरी प्रव्रित्ती आळे माणस ५-६, खान-पान, तप, यग्ग्य, दान के भेद ७, तीन तह्वाँ का खाणाँ-पीणाँ ८-१०, तीन तह्वाँ का यग्ग्य ११-१३, तीन तह्वाँ का तप १४-१६, तीन्नूँ तप सै तीन तह्वाँ के १७-१९, दान बी सै तीन तह्वाँ का २०-२२, ब्रह्म के तीन नाम २३, सर्धा बिन सब नाँ ए बरगा २४, 'ॐ' का महत्त्व २४, 'तद्' का मतबल २५, 'सत्' की व्यत्पत्ती अर अरथ २६-२७, अरथ असत् का अर फळ २८ ।। १७।।

१८. ठाह्हमाँ सन्न्यास त्याग का अद्ध्याय प्रिस्ठ १७३-२००

प्रसन करे दो अर्जन नै १, उन का उत्तर दिया किसन नै २, करम छोडणै पै दो मत ३, किरसण का निर्णै ४, तीन करम सैँ नहीँ छोडणे ५, किस तह्वियाँ करम करै माणस ६, तीन तह्वाँ के त्याग ७-

९, त्यागी का लच्छण १०-११, कर्मा के फळ तीन तह्वाँ के १२, पाँच्चाँ तैँ सब करम बणैँ सैँ १३-१५, समझ न आत्मा नै ए कर्ता १६, कोण न कर्ता करम कर्‌यै बी १७, करम करण मैँ तीन जरूरी १८, ग्यान, करम, कर्ता तीन तह्वाँ के १९, ग्यान के यैँ तीन भेद सैँ २०-२२, करमाँ के बी तीन भेद सैँ २३-२५, तीन तह्वाँ के कर्ता हो सैँ २६-२८, समझ'र थ्यावस तीन तह्वाँ के २९-३५, सुख बी हो सै तीन तह्वाँ का ३५, सुख का लच्छण ३६, तीन तह्वाँ का सुख ३७-३९, किम्मे नाँ सै छुट्‌या गुणाँ तैँ ४०, सुभा गुणाँ तैं बरण बणैँ सैँ ४१, नौ गुण हों तो बाम्हण होवै ४२, छत्री बणदा सात गुणाँ तैँ ४३, बैस बणावैँ तीन करम सैँ ४३½, सूद्र बणावै सेवा का गुण ४४, कोण बरण मैँ के गुण मुखिया ४४, कद्दे कोए भाव जागदा ४४, जात नहीँ अधिकार जनम तैँ, सुभा करम तैँ सिद्धि मिलै सै ४५-४६, सुभा गुणाँ का करम स्रेस्ठ सै ४७, सब कर्मा मैँ कमियाँ हों सैँ ४८, राग न जिस कै सिद्ध बडा वो ४९, राग द्वेस तज ब्रह्मै हो सै ५०-५३, ब्रह्म रूप बण्यै के लच्छण ५४-५६, अर्जन तैँ दी सल्हा किसन नै ५७-५८, गलत कर्‌या सै निर्णै तन्नै ५९, सुभा ठाकरी लड़वावै गा ६०, हिरदै बड़ ईस्स्वर नाँच नचावै ६१, ईस्स्वर की तैँ सरण चल्या जा ६२, कर जो तन्नै आच्छा लाग्गै ६३, बात आखरी सुण ले मेरी ६४-६६, गीत्ता ग्यान न देणाँ किस नै ६७, भगताँ नै यो ग्यान बताणाँ ६८, उस तैँ प्यारा मन्नै नाँ सै ६९, गीत्ता पढणैँ का लाभ कह्या ७०-७१, अर्जन, तेरा भरम मिट्‌या के? ७२, अर्जन नै हाँ मैँ मूँड हलाया ७३, सञ्जै नै बात समेट्टी ७४-७५, खुसी भोत सै मन्नै ७६, बिराट रूप तैँ अचरज हो ह्वया ७७, सञ्जै का निचोड़ ७८ ।। १८।। मङ्गल-गायन

परिसिस्ट - १ मन मैँ राक्खो इन बचनाँ नै प्रिस्ठ २०१
परिसिस्ट - २ गीत्ता सीस्सै मैँ देक्खो खुद नै प्रिस्ठ २१३
परिसिस्ट - ३ गीत्ता सारी टोही, इत आ, प्रिस्ठ २२०
पहले तीज्जे चरण पड़े इत

गीत्तायन की नींम धरी या

१ मङ्गलाचरण

[१]त्रिगुणा माँ ब्रह्माण्डवलै कै, बीच रचाए ओर सजाए।
बिस्वमञ्च की सूत्रधारणी, प्रक्रितिनटी यो लास्य करै सै।।
'ओम' अनाहत नाद गूँजदा, संगीत बण्या ब्याप्प्या मीट्ठी।
नाच्चै नटनी प्रक्रिति भवानी, टाब्बर जिस की दुनियाँ सारी।।
[२]छोह्ही 'महती', 'बुद्धि'रूप या, 'महान्' कहैं पुँल्लिङ्ग बणा कैं।
सत, रज, तम जिब बिसम बर्णैं सैं, [३]त्रिवृत्करण तैं तीन रूप हों।।
तीन्नूँ बँट मजबूत जेवड़ी, बणदी इन तैं, जिस तैं बँधदी।
स्थावर जङ्गम, जड़ अर चेतन, धरती जल अर जल मैं स्रिस्टी।।
सत रज तम गुण मुखिया होवैं, बाक्की दो गुण कम अर कमतर।
'हङ्कार' कुहावै तीन्नूँ सैं ये, पुँल्लिङ्ग सबद तैं बिधि हरि सिव।।
लिछमी सावतरी अर गोरी, मात्ता तीन्नूँ यो ए हो सै।
इस तैं बिकसैं [४-८]सूक्ष्म 'भूत' सुद्ध, नभ वायू अग्नी जल धरती।।
पञ्चीकृत हो पाँच्चू बँट कैं, पाँच्चूँ मिलदे आप्पस मैं ये।
'महाभूत' नाम तैं स्रिस्टि करैं सैं, आग्गै सृस्टी इन तैं बणदी।।
प्रक्रिती के ये आठ रूप सैं, सारै जग मैं व्यापत कारण।
गहणै मैं स्योन्ना होवै, न्यूँ ए आट्ठूँ दुनियाँ मैं सैं।।

[९-१९]मन कै सँग अर ग्यारा इन्द्री, व्यष्टि देह मैं करम ग्यान की।
पाँच इन्द्रियाँ ग्यान करावैं, [२०]रूप, [२१]गन्ध, [२२]रस, [२३]सबद अर [२४]स्परस का।।
आँख, नाँक, कान, जीभड़ी अर, खाल पाँचमी काया पर स्थित।
साधन बणदी 'करण' कुहावैं, चौबिस सैं ये रूप 'प्रक्रिति' के।।

न्यूँ तेईस टाबराँ आळी, 'प्रक्रिति' भवानी नटनी की मैं।
करूँ बन्दगी कात्तक सुदि की, बारस तिथ अर दीतवार मैं।।

बरस तिहत्तर बिक्रम का सै, सदी बीसवीं बीत्त्यैं पाच्छै।
ईस्वी सन् के बीत्ते सोळ्हा, मास नवम्बर, तेरा तारिख।।

इच्छा द्वेस'र सुख दुख सारे, भाज्जैं मेरे मातक्रिपा तैं।
रहूँ बण्या 'सङ्घात' देह मैं, ध्रिति, चेतना धारण करदा।।
इतणै बड्डै खेत्तर का मैं, फसल उपजदी सब भोग्गणियाँ।
ठाठ-बाठ तैं रहँदा देक्खूँ, प्रक्रिति नटी कै मधुर न्रित्य नै।।

अग्निकुण्ड ले एक हाथ मैं, डमरु, अभय अर गज-कर-मुद्रा।
नटवर भोळे सिव सङ्कर जी, बिस्व मञ्च पै ताण्डव कोमल।।
मधुर रचाँदे डमरु बजा कैं, सुर [९], व्यञ्जन [२५] अधनारीश्वर से।
अन्तस्थ बरण [४] अर [४]ऊस्म धुनी, वैं बी सैं [९] जो नहीं एकली।।
बोल्ली जावैं, टिक कैं रहँदी, हो कैं आस्रित सुर-ब्यञ्जन पै।
स्थान, करण का जतन, मातरा, इन पै आस्रित धुनियाँ सारी।।
मानव बोल्लैं, दानव बोल्लैं, जग मैं जड़ चेतन सब बोल्लैं।
इन तैं बणदी बिसव बाक सै, जिस नैं बोल्लैं बिसव पसू सैं।।

लै तैं, लै बिन,या फिर गा कैं, करै स्तवन सै संकर सम्भू।
स्रिदङ्ग, पखावज, घुँघरू, बीणा, तत, घन, वाद्य, सुसिर, सँग मैं।।
डमरु बजा कै घुँघरू बान्धे, सङ्खनाद तैं आप्णी घरणी।
प्रक्रिती नटी नै नाँच-नाँच कैं, खूब रिझावै नटपति पति सै।।

मोहित, बिस्मित, राँच्या-माँच्या, देक्खूँ मैं सूँ अर चाहूँ सूँ।
न्यूँ ए चल्दा रहै निरत यो, बिस्व मञ्च पै स्रिस्टी सारी।।
न्यूँ ए आन्दी जान्दी रहँदी, मैं बी इस नै माँ की गोद्दी।
बैट्ठ्या निरखूँ ओर मजा ल्यूँ, देख नटाँ कै पति अर नटनी।।

गीत्ता टीक्का रची छन्द मैं, ईब नींम मैं उस की बान्धूँ।
बात ततव की, साफ सूथरी, सच्ची ओर प्रमाणित लिक्खूँ।।

नटपति-नटनी क्रिपा करैं या, क्रिपा करैं अर जलम-जलम मैं।
नित्य निरतरत मधुर दुनी मैं, पकड़ आँगळी मनै नचावैं।।

२ कोरू-पाँडवाँ का इतहास

सूरज अर चन्द्र बंस दो सैं, मुखिया छत्री जाती के ये।
सूर्यबंस मैं एक लाडली, हुई 'इला' थी, जिस कै नाँ तैं।।
'इलावर्त' यो राज कुहाया, पिह्वोत बसिस्ठ कै जतनाँ तैं।
'इला' बणी 'इल', बखत बीतदैं, बणगी थी 'इल' फेर 'इला' ए।।
मुनि बसिष्ठ की कोसिस तैं पर, फेर बणी 'इल', पर नाँ पूरण।
कदे 'इला' वा हो ज्याँदी अर, 'इल' बी कदे-कदे हो ज्याँदी।।
'इला' कदे वा जिब थी, उस कै, चन्द्रबंस कै 'बुध' तैं होया।
'पुरूरवस्' था चन्द्रबंस का, उस तैं होए 'पुरु' कै कुल मैं।।
'दुस्यन्त' प्रतापी न्रिप होए, 'कौसिक बिस्वामित्र' रिसी की।
बेट्टी पाळी 'कण्व' रिसी नै, प्रेम उमड़ ग्या दोन्नूँ मैं जिब।।
'दुस्यन्त-सकुन्ता' तैं होया, 'भरत' नाम का पुत्र प्रतापी।
सेराँ के दाँत गिण्या करदा, कुल का नाम बण्या अर 'भारत'[१]।।

'भारत' कुल मैं 'हस्तिन्' नाँ कै, राज्जा नै 'हास्तिनपुर' नगरी।
खड़ी करी या रजधानी थी, बड़ी तपी या आप्णै बखतैं।।
'भारत' कुल की, आज बची या, गाम 'हस्तिनापुर' गङ्गा पै।
'हस्तिन' के जेट्ठे बेट्टे थे, 'अजमीढ' नाम के, उस कै 'कुरु'।।
उन कै राजकाल मैं इक बर, काळ भयंकर बारा बरसी।
पड़्या बडा था एक भाग मैं, नदी सुरस्ती ठाठ मारदी।।
मस्ती तैं बहँदी बी नाँ थी, प्यास बुझाँदी खग पसु नर की।
'कुरु' नै जा कैं यग्ग्य कर्‌या उत, हळमूठ पकड़ बाही धरती।।
बरस्या राम धड़ाक्कैं तैं था, 'कुरु का खेत' कुहाया तद तैं।

१. शकुन्तलायां तु दुष्यन्ताद्, भरतश्चापि जज्ञिवान्।
यस्य लोकेषु नाम्नेदं, प्रथितं भारतं कुलम्।। महाभारत आदिपर्व २। ९६

फिर तैं हरियाला वो होया, जन-मन-प्यारे अर 'कुरु' हो गे।।
'कुरु' कै इस करतब कै कारण, कुल बी तद तैं 'कौरव' होया।
'कुरुक्सेत्र' संस्किरत मैं बोल्लैं, 'कुलछेत्तर' इस नै आज कहैं।।
हरियाणा का दखणी हिस्सा, 'जङ्गल' इस नै कहँदे तद थे।।
'कुरु-जाङ्गल' यो हरियाणा था, गउआँ के थे बाच्छे-बाच्छी।
कूद्या करदे खूब रँभाँदे, कहदे 'वत्सघोस' बी इस नै।।

'कुरु' के कुल मैं होए भाई, 'देवापी', 'सन्तनु', 'बाल्हीका'।
'देवापी' नै परै हटा कैं, गद्दी हथियाई 'सन्तनु' नै।।
'सन्तनु' कै गङ्गा तैं जलमे, 'देवव्रत' थे गुणी सूरमा।
राज्जा का मन आ ग्या स्याणी, धीवरकन्या 'सत्यवती' पै।।
पहल्याँ तैं ए एक पुत्र की, बणी कुँवारी माँ मछुवारी।
मछुवारी कै रूपजाळ मैं, सुध-बुध खोए रिषी 'परासर'।।
जा कैं फँस गे माछ स्वयं बण, 'बेदब्यास' थे जलमे उन तैं।
'देवव्रत' नै राज करण का, अधिकार तज्या, सत्यवती नै।।
'पर इस के बेट्टे चाच्चै नै, राज करण नाँ दैंगे', बोल्ल्या।।
'देवव्रत' नै पूज्य पिता की, खुसियाँ खात्तर करी प्रतिग्ग्या।
'ब्याहै नाँ मैं कदे करूँगा, इब तो बण ज्या माँ तैं मेरी'।।
भीस्म प्रतिग्ग्या, करड़ी भोत्ते, करी इसी नाँ कदे किसै नै।
उस्सै दिन तैं 'भीस्म' बण्या वो, 'गङ्गा' का सुत जन-जन-मन मैं।।

राज्जा 'सन्तनु', 'सत्यवती' कै, बेट्टै दो होए 'चित्राङ्गद'।
मातृभूमि की रच्छा करदे, हुए सहीद बिना ए ब्याहे।।
दूज्जे सुत अर विचित्रवीर्य थे ऐयासी तैं, छीज्जे क्सय तैं।
तज दो राणी सुरग सिधारे, 'भारत' बण गे आभाबिरहित।।

भरताँ का कुल बण्या निपूत्ता, 'भरताँ' का यो बखत कसूत्ता।
धार बिचाळै तिरदी नोक्का, भँवर फँसी हिचकोळे लेवै।।

महलाँ मैँ अन्धेरा छा ग्या, 'भरत' बंस न्यूँ डूब्ब्या-डूब्ब्या।
देक्ख्या कुल-माँ सत्यवती नै, सामन्ताँ की राय मान कैँ।।
कौरवराज बचाणै खात्तर, गद्दी का बारिस पाणै नै।
बड़ळी राणी 'अम्बिका' तैँ, 'आप्णै पति कै आद्धै भाई।
जेठ ब्यास तैँ बंस चलावै', हुकम दिया अर आन्धा छोह्या।।
होया उस तैँ, वारिस नाँ वो, बिकलाङ्ग होण तैँ बण पावै।
मात्था फोड्च्या सत्यवती नै, बहू दूसरी नै आग्ग्या दी।।

जरठ जेठ का रूप तपस्वी, देख बहू या पीळी पड़ गी।
इस तैँ होया पुत्र 'कामला', पाण्डु रोग तैँ पीड़ित वो था।।

दोसरहित'र सुन्दर पोत्ता, पाणै खात्तर फेर कह्या पर।
मन नाँ मान्न्या राणी का था, इब कै उस नै दास्सी भेज्जी।।

जलम 'बिदुर' का होया उस तैँ, नाँ वो मान्न्या राजबंस का।
सामन्ताँ का मान मशविरा, राज चलाया सत्यवती नै।।

बड्डे होए राजकुँवर दो, 'पाण्डु' कुँवर युवराज बणाए।
दासीपुत्र 'विदुर' बी आप्णी, नीतिकुसलता, सूझबूझ तैँ।।
भोत मानता और दबदबा, पा दरबारी सामन्त बणे।
गुणियाँ 'पाण्डु'-सुताँ के अर वैँ, रहे हितैसी सदा-सदा ए।।

ताऊ भीसम कै कहणै पै, 'गन्धार' देस कै राज्जा नै।
आप्णी बेट्टी थी ब्याही, 'ध्रितरास्टर' आन्धै कै संग मैँ।।
सेत्ती आप्णा पुत्र 'सकुनि' था, दरबारी सामन्त बणा कैँ।
भाण-हिताँ की रच्छा खात्तर, भेज बिठाया हास्तिनपुर मैँ।।
'ध्रितरास्टर' तैँ 'गन्धारी' कै, 'दुर्योधन' 'दु:सासन' आदी।
राजकुँवर सौ, एक कुमारी, होए अर था एक 'युयुत्सू'।।
'गन्धारी' की गर्भस्थिति मैँ, 'ध्रितरास्टर' की सेवा करदी।
बैस्स्य नार तैँ जाम्म्यै बाळक, 'युयुत्सु' का नाँ मेळ मिलै था।।

गुण सुभाव मैँ सब भाइयाँ तैँ, न्यारा-न्यारा रहँदा वो था।
बीर 'जयद्रथ' सिन्धु देस के, उन तैँ ब्याही कुँवरि 'दुस्सला'।।

'कुन्तिभोज' की राजकुमारी, कुन्ती थी सँग 'पाण्डु' कुँवर कै।
ब्याही आई राणी बण गी, सोखीन तबीयत 'पाण्डू' थे।।
सैर-सपाट्टै अर सिकार मैँ, मन था उन का लाग्ग्या रहँदा।
एक बखत वैँ बणे सिकारी, म्रिग नाँ बीन्ध्या, बींध दिये रिसि।।
ग्रिहस्थ धरम मैँ पत्नी कै सँग, मरदै रिसि नै स्राप दिया यो।
'इसी स्थिती मैँ होगा जिब तैँ, जीवण तेरा पूरा होगा'।।
भोग तथा सन्तान पाण नै, धर्म घिरस्थी का पाळन नै।
राज्जा की इच्छा पै रोक्क्या, पर बंस चलाणै कै खात्तर।।
एक उपाय सुझाया उस नै, कुन्ती की कन्यावस्था मैँ।
दुर्वासा नै मन्त्र दिया था, परयोग मन्त्र का कर उस नै।।
धरमराज तैँ पुत्र 'युधिस्ठिर', वायुदेव तैँ बली 'भीम' अर।
'इन्द्रदेव' तैँ 'अर्जन' पाए, 'सोकण पत्नी 'माद्री' बी नाँ।।
बाँझपणै तैँ कदे दुखी हो', सोच 'कुन्ति' नै 'माद्री' पै बी।
उसै मन्त्र पै अस्वियुगल तैँ, 'सहदेव', 'नकुल' दो सुत पाए।।

होणी परबल सब तैँ होवै, 'कामदेव' नै करे बिकल थे।
'माद्री' कै सँग भोगस्थिती मैँ, रिसि की वाणी वज्र बणी थी।।
आकुल ब्याकुल 'माद्री' नै तज, देहजाळ तैँ हंसा उड़ ग्या।
पछतावा करदी 'माद्री' बी, सङ्ग 'पाण्डु' कै अग्गीरथ पै।।
बणी सुहागण सङ्गै पति कै, मिली समाई पञ्च ततव मैँ।
'कुन्ती' माँ नै हिम्मत कर कैँ, पाँच्चूँ छोह्रे खूब सँभाळे।।

३ युद्ध महाभारत क्यूँ होया

'पाण्डु' सिंह की म्रित्यू पाच्छै, फोज गीदड़ाँ की बढ आई।
'सकुनी'-बरगे सामन्ताँ की, सह पै 'ध्रितरास्टर' नै था।।

आग्गै बढ कैं राज सँभाळ्या, 'भीसम' बरगे बीर महारथ।
बँधे वचन तैं लाग्गे पाच्छै, दुर्योधन राहू बी छाया।।
'पाण्डू' चन्द्राँ पै गहण लग्या, उन नै मारण के जतन करे।
'भीस्म','विदुर' थे पाण्डवहित मैं, मन तैं उन नै चाह्वै वैं थे।।
झैर खुवाया, बाँध-बूँध कैं, गेर नदी मैं लाख राळ तैं।
बण्यै भवन मैं ठहरा उन नै, रात पड़्यै पै आग लगा कैं।।
दुनियाँ तैं ऊप्पर भेज्जण के, जतन करे थे भोत कसूत्ते।
आप्णै हितकर सामन्ताँ की, किरपा पा वैं बचदे आए।।
'परगट रहणा ठीक नहीं इब', सोच समझ न्यूँ 'लाक्साग्रिह' तैं।
ज्यान बचा कैं, रात पाड़ कैं, ल्हुकदे-छिपदे दर-दर भटके।।
'दुर्योधन' हर न्यूँ 'कौरू'-कुल के, जनमानस मैं बचे धुरन्धर।
'पाण्डू'-पुत्तर अर 'कुन्ती' थे, याद्दाँ कै सँग सेस रहे सब।।

ल्हुकदे-छिपदे साल बीत गे, 'द्रुपद' राज मैं प्हूँचे 'पाण्डव'।
ब्राह्मण रूप धरैं वैं उत थे, घड़े बणाँदै भार्गव कै घर।।
जा कैं ठहरे माँ कै सँग थे, ब्रम्चारी भिक्साटन कर कैं।
माँ का, आप्णा पेट पाळदे, रहणै लाग्गे सन्तोस धरे।।
जो कुछ मिळदा, माँ कै आग्गै, धर प्रभु का परसाद समझ कैं।
दिन वैं काड्डैं गुपत रूप तैं, गिण-गिण कैं दिन साँझ-सबेरै।।

साल जाण मैं दिन थे थोड़े, द्रुपदराज मैं हलचल होई।
खुस-खुस सा माहोल बण्या था, 'द्रुपद'-कुमारी 'क्रिस्णा' का उत।।
मँड्या स्वयंबर, राज्जे आए, भीड़ घणी आ कट्ठी होई।
देस्साँ परदेस्साँ तैं जनता, देक्खण आई बडा अजूब्बा।।
कई हाथ पै ऊप्पर मछली, चक्कर काट्टै, नीच्चै राक्ख्यै।
बडै भाँड मैं भर्यै तेल मैं, ऊप्पर चक्कर काट्टै, उस की।।
देख आँख नै बींध गेरणा, नाम्मी-ग्राम्मी बड़े धनुर्धर।
होए फैल, स्वयंबर अर न्यूँ, 'क्रिस्णा बिन ब्याही रह ज्यागी'।।

च्यारूँ कान्हीं मच्यै सोर मैं, देक्खणियाँ मैं बैट्ठे पाण्डो।
छत्री कुल पै थू-थू करदे, लोग्गाँ नै वैं सह नाँ पाए।।
ऊठ्ठे पण्डत 'अर्जन' उन मैं, भौंचक, मुँह बाए जन देक्खैं।
'पण्डज्जी की बुद्धी नाट्टी, छत्री वीर धनुर्धर भारी।।
कर नाँ पाए, ईब करैगा, छोह्टा यो मूरख ब्रम्चारी'।
सुण, मुँह पै मुस्कान बखेरे, गम्भीर धीर कदम कदम धर।।
ठाया धनुस, निसान्ना साद्ध्या, तेलपड़ी परछाई नै लख।
बाणनौंक जा ऊप्पर लाग्गी, आँख बिँधी, अर मछली की थी।।
जै-जैकार गजब का होया, 'पण्डत, तन्नै कर्या गजब के'।
'क्रिस्णा' नै जैमाळ पह्टा दी, माळ पड़ी या चोक्खी लाग्गै।।
छप्पन इंची छात्ती आळै, पण्डत ब्रम्चारी कै गळ मैं।

राजकुँवरि या छत्राणी इब, बहू बणा दी पँडताणी सै।।
ईब गुपत पर रह नाँ पाए, धूमधाम तैं ढोल नगाड़े।
रहे बाजदे लोग नाँचदे, जनता मैं उत्साह घणा था।।
छै: थे लिकड़े ल्हुकदे-छिपदे, ज्यान बचा कैं, रात पाड़ कैं।
सीन्ना ताणे सात पधारे, चढ परजा कै प्यार-ज्वार पै।।
पाँच्चूँ पाण्डो अर कुन्ती, सँग दुर्पद की बेट्टी क्रिस्णा।
पण्डत तैं बण छत्री पाण्डो, आए सात्तूँ 'हस्तिनपुर' मैं।।

कुरु-पञ्चालाँ मैं खुसियाँ संग, पाण्डो बस गे राजमहल मैं।
दुर्योधन कै हठ कै कारण, दो-फाड़ बँडी कौरू-गद्दी।।
'कुरु-जाङ्गल' मिल्या पाण्डुवाँ नै, जमुना इस की सीम बणी थी।
सिक्सा, कोसल ओर बीरता, स्नेह प्रजा तैं ओर परिस्रम।।
परजा कै बी प्रेम कारणै, राज बण्या खुसहाल भोत यो।
'इन्द्रप्रस्थ' था इन्द्रलोक तैं, बढ कैं सोण्हा सरसब्ज सुखी।।
सभाभवन था नाम 'सुधर्मा', गजब बणावट बिसकर्मा की।
सिक्का आप्णा खूब जमाया, च्यारू भाईयाँ नै जीत दिसा।।

'राजसूय' जो अति वीर करैं, 'युधिस्ठिर' नै था वो यग्ग्य रचाया।।

इर्खा, गुस्सा, द्वेस भाव का, मजबूत किला 'दुर्योधन' का।
सह नाँ पाया पाण्डुसम्रिद्धी, 'पा नाँ सकदा पार लड़्यैं तैं।।
जूऐ मैं दे इन्हैं चुनोती, फड़ पै इन नै चित्त करूँगा'।
राह सुझाई 'सकुनी' नै या, न्योँदा आया द्यूतयुद्ध का।।
जुआ-बहादर बीर युधिस्ठिर, छली प्रपञ्ची 'सकुनी' तैं वैं।
दो बर हारे राज्जा जी थे, राज गँवाया, इज्जत खोई।।
जीत्तण आळै 'दुस्सासन' नै, राणी 'क्रिस्णा' भरी सभा मैं।
नङ्गी करणै खात्तर ल्या कैं, खड़ी करी थी, इस तैं बध कैं।।
बेइज्जत के कोए होगा? अर, बारा बरसी बनवास मिल्या।
उस कै बी पाच्छै बरस तेह्रमाँ, ल्हुक कैं छिप कैं रहणाँ होगा।।
नाँ जो पूरी होई सर्तें, खाल्ली ठोस्सा उन्हैं मिलैगा।
'टील्ली-लील्ली' झर ए होगा, कठै थोबड़े ल्होक धरैंगे।।

घूँट खून के पी कै पाण्डो, लिकड़े बेइज्जत हो उत तैं।
देक्खण नै बी 'इन्द्रप्रस्थ' मैं, सभा 'सुधर्मा' जा नाँ पाए।।
मुस्कल तैं पर धीरज हिम्मत, धर कैं काट्टी बारा-बरसी।
अग्ग्यातबास के तिन सो पैंसठ, दिन पहर, घड़ी, पल त्रुटि गिण कैं।
काढ्ढे उन नै भोत जतन तैं, छुप कैं, ल्हुक कैं, ज्यान छुपा कैं।।
आक्खर रहे विराटमहल मैं, चाक्कर बण कैं छह वैं प्राणी।
[१]बणे जुआरी जुआ सिखाँदे, [२]पका रसोई राजमहल मैं।।
इज्जत पै अर प्यारी राणी, क्रिस्णा की जो, हाथ उठ्या वो।
तोड़-ताड़ कैं राज्जा जी की, बाळ नाक कै सैनापति का।।
[३]नाँच सिखा कैं राजकुँवरि नै, नाँच्चे उस की आँङ्गळियाँ पै।
[४]राणी, कुँवरी अर मुँह लाग्गी, सामन्ताणियाँ कै पैराँ पै।।
मैंहदी, म्हावर ओर आलता, माँड माँडणे, बाळ काढ कै।
[५-६]डाङ्गर-ढोराँ का गोब्बर अर, घोड़्याँ की बी लीद उठा कैं।।

कोत्यक सारे कर कैं उन नै, काढ्ढे आप्पणे दिन मुस्कल तैं।
तान्र्याँ-मेह्णयाँ अपमान्नाँ तैं, मजबूत घणी थी छात्ती होई।।

इन बीत्ते तेह्राँ बरसाँ मैं, दुर्योधन नै थी आप्पणी ताकत।
खूब बढ़ाई, पाण्डो लाग्गे, खाल्ली पोल्ले ढँक्यै ढोल से।।
छल बल अर कर भोत बहान्ने, 'राज न देणा पाण्डुसुताँ नै'।
अटल अडिग था निर्णै सारे, कोरू दळ का, इसै समै मैं।।
आए पाण्डो 'हास्तिनपुर' मैं, तेह्रा-बरसी देसलिकाड़ा।
काट, आस ले राज पाण की, उन नै उत था ठोस्सा पाया।।
पहल्याँ तो बरस गिणन मैं ए, माथापच्ची मारामारी।
ज्योतिससास्त्र बिचारैं होई, पाण्डो जीत्ते उस मैं बी, पर।।
'पतनाळा तो उतै गिरैगा', दुर्योधन नै ठाण लिया था।
पर, ले दे कैं समझौत्ते के, पाण्डुसुताँ नै जतन करे कई।।
आक्खर मैं किरसण बी आए, पर मर्यादा राजधरम तज।
उन ती उत ए कैद करण की, राजसभा मैं कोसिस होई।।

बच गे किरसण कैद होण तैं, विदुर जिस्याँ के जतनाँ तैं थे।
'सकुनि','करण' तैं दबी सभा थी, दुर्योधन नै न्यूँ साफ कह्या।।
'सुई-नोँक कै नीच्चै आवै, जितणी धरती, उतणी बी मैं।
नाँ ए द्यूँ गा बिना लड़ाई ए, जा कैं कह दे भेज्जणियाँ नै।।

कोरूदळ कै इस निर्णै पै, पाण्डो हो गे लाचार घणे।
सैना नाँ थी उन पा कोए, निर्बल का अर साथ देण नै।।
वैं ए आवैं, जो होँ साच्चे, सच्चाई का साथ निभावैं।
अन्याई कै सँग नाँ बैट्ठैं, साथ कदे नाँ देवैं उस का।।
न्याय धरम पै चाल्लण आळे, सिकार जुलम के मान्ने जाँ थे।
योद्धा बी थे जग मैं जाहिर, 'कुणबे मैं न्यूँ आप्पस कै इस।।
घोर युद्ध मैं मारे जाँगे, बिना खोट कै मासूम बहुत'।

जनता का न्यूँ भला सोच कैं, युद्ध बचाणै की कोसिस मैं।।
लाग्ग्या देख लड़ाई मैं थे, साथ देण नै आए कुछ थे।
साथ बळी का देन्दे सारे, आप्णे बी उत बण ज्याँ दुस्मण।।
न्यूँ था युद्ध महाभारत का, होया कोरू-पाण्डुसुताँ मैं।
परबल कोरू, निर्बल पाण्डो, धरम नीम पै मजबूत खड़े।।

४ व्याक्ख्याता कै मन की पीड़ा

इसी पड़ी या नीम स्वार्थ की, आप्पाधाप्पी, बेरहमी की।
इस की गहरी तैं बी गहरी, जड़ सैं प्होंची पातालपुरी ।।
ग्यान विवेक धरे ए रह गे, स्वारथ, केवल स्वारथ जीवित।
महाविनासी युध यो होया, रामायण तो पाच्छै रह गी।।
रोज्जी रोट्टी घर की नाँ सै, आज समस्या म्हारी उतणी।
स्वार्थ असिक्सा फूट आपसी आप्पाधाप्पी ब्याप्पी मन मैं।।
कर्तब का नाँ ग्यान ध्यान सै, अधिकाराँ की केवल चर्चा।
सुच्चापण नाँ रह्या कितै सै, परहित आग्गै स्वार्थ छोडणा।।
आज मूर्खता मान्न्या जा सै, इस कै कारण देस पिछड़ ग्या।
पाच्छै रह ग्या, पाच्छै रह ग्या, भारत सारा पाच्छै रह ग्या।।

होया भारत गारत इस तैं, ध्रितरास्टर बण बैट्ठे नेत्ता।
जात-पाँत की, ऊँच-नीच की, स्वार्थ-लोभ की मोट्टी पाट्टी।।
बाँध 'गँधारी' बण गी जनता, 'दुर्योधन', 'दुस्सासन' दो ए।
बेट्टे लाग्गैं उस नै प्यारे, उन कै खात्तर किरसण नै बी।।
स्राप देण मैं सकुचाँदी नाँ, निस्स्वार्थ भाव तैं करणै पै।
जोर दिया था किरसण जी नै, 'निस्' तो उस तैं दूर भाज ग्या।।
स्वार्थैं स्वारथ रह ग्या केवल, 'महा अभारत' सै आज बण्या।
बण ज्या फेर 'महाभारत' यो, कराँ प्रतिग्ग्या आज सभी मिल।।
काँधे तैं काँधा जोड़ सभी, कदम ताल पै चाल्लण आळे।
एक्कै बोल्ली बोल्लाँ सारे, जै भारत, जै भारत, प्यारे।।

५ कुलछेत्तर क्यूँ चुण्या लड़न नै

नहीं लड़ाई टळ थी पाई, कोरू पाण्डू राज मिलैं जित।
दाणा-पाणी लड़णाळ्याँ नै, मिल ज्या जित आसानी तैं अर।।
भूमि पवित्तर हरियाळी हो, उत्तै हाम् नै लड़णा चहिये।
सोच समझ न्यूँ 'हास्तिनपुर' की, गद्दी नीच्चै 'कुरु' प्रदेस जो।।
पच्छिम मैं था वो हिस्सा अर, 'इन्द्रप्रस्थ' कै नीच्चै का था।
'जङ्गल' हिस्सा पच्छिम-उत्तर, धर्मभूमि बी यो सारा ए था।।
तीरथ सारे इत ए थे, सैं, 'कुरुछेत्तर' की वा ए भूमी।
परम पवित्तर सरसब्ज घणी, आवाजाई साधन आळी।।
लड़नै खात्तर चुणी स्वयं थी, [१] कोरू-पाण्डू दोन्नूँ नै मिल।

६ ग्यारा अर थी सात अछोण्ही, सेना कट्ठी उत वैं होई

आप्णा आप्णा जोर लगा कैं, सङ्गी सात्थी मित्तर प्यारे।
ओर हितैसी बन्धू बान्धव, राजनीति तैं सन्धी कर कैं।।
बँधे नरेन्दर देस देस के, 'जम्बुद्वीप' के दूर-दूर तैं।
छल कौसल तैं तोड़ मिलाए, 'सल्ल्य' नाम के 'मद्र' देस के।।
राज्जा माम्मा 'माद्रि'-सुताँ के, दुर्योधन नै आप्णै कान्हीं।
याद्दो फोज्जाँ किरसण तैं थी, दुर्योधन नै माँग बिठाई।
आप्णी कान्हीं, भले किसन खुद, साथ निभावैं अर्जन का, अर।।
किरसण नै अर्जन कै रथ की, राज्जी हो कैं रास सँभाळी।
'हथियार उठाऊँगा नाँ मैं', दिया वचन था किरसण नै बी।।
सैना न्यूँ दो कट्ठी होई, ग्यारा 'अक्सोण्ही' कोरू की।
सात अछोण्ही कर अर पाए, पाण्डो आप्णै कान्हीं ल्या कैं।।
एक 'अछोण्ही' सैना मैं हों, दो लाख'र सहस अठारा अर।
सात गुणे सो फोज्जी, उनका, पूरा ब्यौरा बी यो न्यूँ सै ।।[२]

१. शस्त्रेण निधनं गच्छेत् समृद्धं राजमण्डलम्।
कुरुक्षेत्रे पुण्यतमे, त्रेलोक्यस्यपि केशव।। उद्योगपर्व १४३.५३

२. अछोण्ही सैना का विवरण यो सै :-

(बाक्की प्रिस्ठ २४ पै)

७ किस तह्रियाँ फोज खड़ी दोन्नूँ

कुरछेत्तर कै धुर पच्छम मैँ, 'पाण्डो'-सेना पूरब कान्हीँ।
'सूर्यदेव नै नमन करण तैँ, रोज लड़ाई सरू कराँ हाम्'।।
सोच-समझ न्यूँ, जाणूँ, कर दी, उन कै स्याम्ही कोरू-सैना।
जा कैँ उत थी कट्ठी होई, 'दुर्योधन' नै 'कुरु'-सेना की।।
बाग सौँप दी आप्णै दाद्दा, देक्खे-परखे 'हास्तिनपुर' के।
परम हितैसी, भगत समर्पित, ओर सूरमा रण-नीति-कुसल।।
सब तैँ ऊप्पर मान्ने तगड़े, थे सामन्त बडे उन नै अर।
काट 'भीस्म' की बीर 'सिखण्डी', 'पाण्डो' सैना मैँ थे, उन की।
चिन्त्या नाँ कर कौरूदळ के, बडे महारथ गुरु 'दरोण' की।।
काट कुँवर 'ध्रिस्टद्युमन' नै थी, 'पाण्डो'-सैना की बाग सँभाळी।
न्यूँ ये फोज्जाँ दोन्नूँ कान्हीँ, त्यार खड़ी हो दमखम साद्धैँ।।

८ लड़नै की आचारसंहिता, त्यार करी दोन्नूँ पक्साँ नै

युद्ध होण तैँ पहल्याँ दोन्नूँ, पक्साँ नै मिल बैठ लड़ण की।
आचार-संहिता की नियमावलि, देस, परिस्थित, रीति, नीति सब।।
नाँ लड़णाळी, आप्णै धन्धै, लाग्गी उत की जनता का बी।
भला सोच कैँ आच्छी तह्रियाँ, दोन्नूँ पक्साँ नै त्यार करी।। [१]

क्रमाङ्क	इकाई का नाम	अरथ	हात्थी	घोड़े	पैद्दल		कुल योग
१.	पत्ति	१	१	३	५	=	१०
२.	सेनामुख	३	३	९	१५	=	३०
३.	गुल्म	९	९	२७	४५	=	९०
४.	गण	२७	२७	८१	१३५	=	२७०
५.	वाहिनी	८१	८१	२४३	४०५	=	८१०
६.	पृतना	२४३	२४३	७२९	१,२१५	=	२,४३०
७.	चमू	७२९	७२९	२,१८१	३,६४५	=	७,२९०
८.	अनीकिनी	२,१८७	२,१८७	६,५६१	१०,९३५	=	२१,८७०
९.	अक्सोण्ही	२१,८७०	२१,८७०	६५,६१०	१,०९,३५०	=	२,१८,७१०

१. ततस्ते समयं चक्रुः, कुरु-पाण्डव-सोमकाः।
धर्मान् संस्थापयामासुर्, युद्धानां भरतर्षभ।। भीष्मपर्व १। २६

९ पाँडुवाँ नै कोरुवाँ तैँ, न्यायपकस मैँ आणाँ बोल्ल्या

युद्ध सरू होणै तैँ पहल्याँ, पाण्डुवाँ नै कौरवाँ कै कुछ।
नाम्मी-ग्राम्मी बीराँ पै जा, न्याय पकस का साथ देण की।।
करी प्राथना गुप्त, प्रकट मैँ, एक 'युयुत्सू' उन कै कान्हीँ।
आणै खात्तर त्यार हुए थे,[१] युध तैँ पहल्याँ रात अँधेरै।।
पाण्डो आए सैँ पूज्य जनाँ पै, आसीसाँ उन तैँ लेणै नै।
'आसीसाँ सैँ सारी थाह्ही, लड़ न सकाँगे थारै कान्हीँ।।
स्वारथ बान्धै माणस नै सै, वो नाँ बँधदा कदे किसै तैँ।
स्वार्थबँधे साँ दुर्योधन तैँ, मन तैँ तम्ह नै सीस घणी सैँ।।'
बोल्ले 'भीस्म'र 'द्रोण' जिसे सब,[२] खुस-नाखुस कुछ पाण्डो आए।
आ गी सिर पै कुणबा-घाणी, जोस होस थे दोन्नूँ उन मैँ।।

१० ध्रितरास्टर नै जुध की खबराँ, पाणै की इच्छा प्रगट करी

मोह् ममता मैँ अळझे-पळझे, भींत-बिचाळै लाट्ठी बरगे।
ध्रितरास्टर थे जाण्या चाह्वैँ, हाल युद्ध के, ब्यास रिसी नै।।
देणी चाही दिव्य द्रिस्टि वैँ, देख सकैँ जिस तैँ खुद युध नै।
आप्णै स्वारथकारण बोल्ले, आप्णै बैट्टे ओर भतीज्याँ।।
बन्धू, बान्धो, रिस्ते, नात्ते-दाराँ की, मारा-काट्टी नै।
नाँ मैँ, देक्ख्याँ चाहूँ सुण कैँ, हाल युद्ध का पाणा चाहूँ।। [३]

११ ध्रितरास्टर नै खबर देण का ब्यास रिसी नै ब्यौंत बणाया

ब्यास रिसी नै रस्ता काड्ढया, 'ध्रितरास्टर' कै अति बिस्वासी।

१. अहं योत्स्ये भवतः, संयुगे धृत-राष्ट्रजान्।
युष्मदर्थे महाराज, यदि मां वृणुषेऽनघ।। भीष्मपर्व ४३। ९६
२. अर्थस्य पुरुषो दासो, दासस्त्वर्थो न कस्यचित्।
इति सत्यं महाराज, बद्धोऽस्म्यर्थेन कौरवैः।। भीष्मपर्व ४३। ४१
३. न रोचये ज्ञाति-वधं, द्रष्टुं ब्रह्मर्षिसत्तम।
युद्धमेतत् त्वशेषेण, शृणुयां तव तेजसा।। भीष्मपर्व २। ६

उन कै रथ के कोचवान जो, छत्रि 'गवल्गण', ब्राह्मण स्त्री तैं।।
जलमे 'सञ्जै' सूत [१] लगाए, संवाद देण नै कर जुध के।
दोन्नूँ पकसाँ तैं बातचीत, नियम बणा, रक्सा, सुविधा के।।
जुद्धक्सेत्र मैं हाँड-हाँड कैं, खबराँ काड्ढण अर जाणन के।
सक्ती, अधिकार दिये उन तैं, नाँ ए उन पै सस्त्र चलैंगे।।
दिन अर रात्री सभी समै वैं, गुपत'र परगट किसै तह्राँ की।
खबर सबै वैं काढ सकैंगे, रहणै-सहणै खाणै-पाणै।।
थकणै पै विस्राम करण की, सारी सगवड़ उन्हैं मिलैं गी [२]।
रणछेत्तर तैं खबर देण की, पहली बार व्यवस्था होई।।

१२ दस दिन ताईं खबर काढ कैं, सञ्जै नै आ खबर सुणाई

सोण्ही आच्छी दोन्हूँ तरफी, इसी व्यवस्था पा कैं सञ्जै।
रहे जुद्ध मैं दस दिन ताईं, 'भीस्म' पितामह नै जिब ताईं।।
घोर जुद्ध मैं पाण्डो-सेना, गाज्जर-मूळी तह्रियाँ काट्टी।
दसमैं दिन कैं साँझ समै मैं, सिखण्डि राहु नै भीसम सूरज।।
पूरी तह्रियाँ गास बणा कैं, फैंक्क्या सोया सरसैय्या पै।
रात बिता कैं उत्तै दसमी, आग्लै दिन, सञ्जै उत आए।।

१३ ध्रितरास्टर तैं सञ्जै नै, खबर सुणाणी सरू करी

सब तैं पहल्याँ दुखी ह्रिदै तैं, सञ्जै नै उत खबर सुणाई।
'म्हाराज, पितामह 'भीस्म' रहे नाँ, दस दिन ताईं लड़ कैं कर कैं।।

---

१. क्षत्रियाद् विप्र-कन्यायां सूतो भवति जातितः। मनुस्मृति १०। ११

२. एष ते सञ्जयो राजन्, युद्धमेतद् वदिष्यति।
एतस्य सर्व-सङ्ग्रामे, न परोक्षं भविष्यति।। भीष्मपर्व २। ९
प्रकाशं चाप्रकाशं वा, दिवा वा यदि वा निशि।
मनसा चिन्तितमपि, सर्वं वेत्स्यति सञ्जयः।। ११
नैनं शस्त्राणि छेत्स्यन्ति, नैनं बाधिष्यते श्रमः।
गावल्गणिरयं जीवन्, युद्धादस्माद् विमोक्ष्यते।। १२

घम्मस-घाणी पाण्डुफोज की, राहु 'सिखण्डी' नै गस गेरे।'
प्रथम खबर या ध्रितरास्टर कै, हिरदै मैं मुक्कै-सी लाग्गी।। [१]
बेसबरी तैं ध्रितरास्टर नै, पूच्छ्या, सञ्जै तैं न्यूँ कह रै।
'धरमभूमि कुलच्छेत्तर मैं रै, के कर ह्वे थे मेरे बेट्टे।।
अर पाण्डु के छोह्वे सञ्जै?', सञ्जै नै फिर हाल सुनाणा।
सरू कर्‌या उत होया जो था, दस दिन ताईं रणछेत्तर मैं।।

१४ पहलै दिन का हाल सुणाया

पहलै दिन कै प्रात काल का, हाल सुणाया 'गीत्ता' या सै।
भीस्म परब कै पच्चिसमैं तैं, ले ब्याळिसमैं अद्ध्याय तईं।।
उस कै पाच्छै होए जुध का, हाल बताया म्हाभारत मैं।
'भीस्म' परब तित्ताळिसमैं तैं, ले 'सौप्तिक' कै नोम्मै ताईं।
ठारा दिन कै जुध का बर्णन, ब्यास रिषी नै कर्‌या उठै सै।।

१५ आतमघाती फोज्जाँ नै लख, अर्जन नै उत चिन्त्या होई

युद्ध सरू होणै तैं पहल्याँ, अर्जन आप्णै मोर्चै पै न्यूँ।
बोल्ल्या किरसण नैं, 'रथ मेरा, दोन्नूँ सेन्नाँ कै कर बीच्चूँ'।।
उत जा देक्ख्या उस नै स्याम्हीं, ठाठ मारदा माणस-सागर।
फोज्जाँ की ज्यूँ लहर ऊठदी, पाच्छै बी था यो ए मञ्जर।।
दोन्नूँ कान्हीं आप्णे प्यारे, खड़े हथेळी पै ज्यान धरे।
ममता तैं उस का मन पिघळ्या, 'सारे माणस मर ज्याँ इतणे।।
उस का कारण अर्जन होवै, कुणबा-घाणी दुनियाँ की हो।
लोग लुगाई बाळक बूढ्ढे, असक्त, अपाहिज दुनियाँ भर के।।
अर कुलनारी तज मर्यादा, इत-उत जा कैं बैट्ठैं गी वैं।

---

१. अथ गावल्गणिर्विद्वान्, संयुगादेत्य भारत।
प्रत्यक्ष-दर्शी सर्वस्य, भूत-भव्य-भविष्यवित्।। भीष्मपर्व १३। १
ध्यायतो धृतराष्ट्रस्य, सहसोत्पत्य दुःखितः।
आचष्ट निहतं भीष्मं, भरतानां पितामहम्।। १३। २

घर-घर मैं नाजायज टाब्बर, धरम-करम अर रीत पुराणी।।
बिगड़-तिगड़ छिन-भिन हो ज्याँ गी, मैं नाँ लड़णा इन तैं किरसण।
घोर भयङ्कर पाप करम यो, गेरै हाम् नै नरकाँ मैं गा।।
लालच, गुस्सै, द्वेस, भाव तैं, सस्त्र हाथ ले मन्नै मारैं।
ओर निहत्था इन कै स्याम्हीं, खड़्या रहूँ, न्यूँ ज्यान काढ दैं।।
राँद कटैगी, मेरी खात्तर, भोत्तै आच्छा किरसण होगा'।
घोर निरासा, पछतावा अर, मजबूरी आ गी अर्जन आग्गै।।
चढ़ी काँपणी गात-गात मैं, धूज्जण लाग्गे हाथ'र पाँ थे।
मात्था बी था घूम्मण लाग्ग्या, आँक्ख्याँ मैं अन्धेरा छा ग्या।।
गेर धनुस गाण्डीव आपणा, रथ मैं पाच्छै वो जा बैट्ठ्या।
बड़ी विचित्तर हालत होई, 'अर्जन किरसण के ये कर ह्वे?'।।
लोग समझ नाँ पा ह्वे कुछ थे, ढङ्ग लड़ाई का नाँ लाग्ग्या।
असमञ्जस की स्थिती बणी थी, 'मिस्कोट' किसी या चाल्लै सै रै।।
एक-दूसरै कान्हीं देक्खैं, अर देक्खैं अर्जन किरसण नै।
मुँह लटका कैं गेर धनुस नै, बैट्ठ्या अर्जन, के यो हो ह्वया?।।
कोरू पाण्डे दोन्नूँ मञ्जर, देक्खैं थे ये आप्णै ढंग तैं।
सदा हाँसदे अर मुस्काँदे, किरसण दीक्खे गम्भीर घणे।।

१६ अर्जन की चिन्त्या का कारण

अर्जन चाह्वै भोत घणा था, आप्णै प्रिय रिश्ते नात्त्याँ नै।
ममता इन तैं बँधी घणी थी, मोह'र ममता कारण इन कै।।
सोक घणा मन मैं होया, इन कै कारण छत्री का वो।
करतब, धरम सबै था भूल्ल्या, खुद की इज्जत मान'र सोहरत।।
स्वाभिमान बी वो था भूल्ल्या, ब्राह्मण का तो धरम करम सै।
जीणै का अधिकार भीख सै, छत्री नै तो घोर भयानक।।
अधरम अपराध बडा वा सै, वो बी करणा बुरा न लाग्ग्या।
किरसण नै थी होई चिन्त्या, मोक्के इस से आए पहल्याँ।।

सैं ये सारे देस दुनी मैं, आवैं गे बी सदा-सदा ए।
सब काळाँ देस्साँ मैं सब नै, इस की तो सै जड़ै काटणा।।
भोत जरूरी, सोच समझ न्यूँ, अर्जन ताईं समझाणै की।
समझी, सोच्ची जुगत किसन नै, जो वैं सारी ब्यास रिसी नै।।
दूज्जै, तैं ले ठारा ताईं, सतह्वा अद्ध्यायाँ मैं बान्धी।
स्रीमद्भगवद्गीत्ता या सै, 'गीत्ता पर्व' बणाया रिसि नै।।

१७ अर्जन अर ध्रितरास्टर की, चिन्त्या मैं था फरक घणा

धरती खात्तर लड़णा लाग्ग्या, ध्रितरास्टर नै बी था भूण्डा।
रोळै मैं अर देख दिरस यो, कोए किम्मे समझ न पाया।।
उस नै दोस्सी पाण्डो मान्ने [१], अर्जन मैं उस मैं भेद घणा था।।
ध्रितरास्टर की सोच टिकी थी, आन्धै बूड्ढै ताऊ खुद पै।
अर्जन नै पर सोच्या गहरा, हो ऊप्पर आप्णै आप्ण्याँ तैं।।

१८ गीत्ता जी का मुक्ख्य बिसै

मोह कारणै ममता होवै, ममता कै आस्रै वस्तू का।
नास सोच बी चिन्त्या होवै, प्यारी वस्तू नष्ट होण पै।।
होवै जो चिन्त्या, उस का तो, कहणा के सै, वा तो मन मैं।
दुक्ख बिसाद घणा सै करदी, या ए चिन्त्या 'सोग' कुहावै।।
इस का कारण मोह भरम यो, माणस मन मैं, क्यूक्कर इब मैं।
खोल बताऊँ ततव वस्तु का, असलीयत माणस नाँ समझै।।
सही गलत का, नित्त अनित का, भेद मनुख जिब नाँ समझै।
सब तैं पहल्याँ किरसण नै थी, या ए बात बताई उस ती।।
मरि हैं सूरज, मरिहै चन्दा, बडे सूरमा ग्यान्नी, धनपति।
मरिहैं सारे, सारी काया, हाम् नाँ मरिहैं, या ए माया।।

---

१. धर्मादधर्मो बलवान्, सम्प्राप्त इति मे मतिः।
यत्र वृद्धं गुरुं हत्वा, राज्यमिच्छन्ति पाण्डवाः।। भीष्मपर्व १४। ४६

मरणै आळी काया सारी, सारा जग सै मरणै आळा।
काया मैं जो जीव बिराजै, नाँ वो मरदा, ओर मरै सब।।
सोच मरण की जिन कै, जिन तैं, दुक्खी हो ह्र्या, वैं तो सारे।
मरे पड़े सैं पहल्याँ तैं ए, धरमजुद्ध कर अर्जन इन नै।।
सुरग प्हुँचा दे, नाँ कर इन कै, मरणै की तैं चिन्त्या अर्जन।
ततव कह्या यो गूढ स्रिस्टि का, किरसण नै था अर्जन ताईं।।
मरण जीण कै चक्कर मैं पड़, भरमाया, टूट्या अर भटक्या।
अर्जन न्यूँ ए पड्या रह्या उत, मूँह् ळटकाएँ बैठ्या कातर।।

राह दूसरी फेर दिखाई, करमयोग पै चाल्लण की थी।
नित्य अनित्य न अर्जन समझ्या, उस नै दूज्जी राह दिखान्दे।।
किरसण बोल्ले अर्जन नैं न्यूँ, करम करण का एक तरीक्का।
जिस बिध करणैं तैं सै माणस, नाँ ए बँधदा करमजाळ मैं।।
फळ जो चाह कैं करम कराँ साँ, वो फळ पाणा म्हारै बस नाँ।
पर उस चाहत नै तो साँ सारे, अर्जन, दुनियाँ मैं बाँध लिये।।
करम करे सै काया आप्णै, भीत्तर स्थित ग्यारा इन्द्री तैं।
वैं भी आप्णा काम करैं सैं, सत रज तम इन तीन गुणाँ तैं।।
आत्माराम किमे नाँ करदा, बैठ किनारै, ऊप्पर हो कैं।
करमाँ मैं तैं रम नाँ अर्जन, नाँ वैं तेरा किमै बिगाड़ैं।।
करमयोग का रस्ता यो सै, भोत सुरच्छित, इस पै चल तैं।
अर्जन तैं फिर योग ध्यान की, बात बताई किरसण जी नै।।

या सिक्सा बी अर्जन नै नाँ, समझा पाई, तद थे किरसण।
बोल्ले उस नै योग ध्यान की, यग्ग्य भाव तैं करम करण की।।

सब तैं पाच्छै किरसण नै था, आप्णा बैभव, रूप दिखाया।
उस मैं उस नै सारी दुनियाँ, उस अद्‌भुत कै जबड़्याँ मैं थी।।
देक्खी, भाज्जी जाँदी, जिस का, ओड़ कितै नाँ दीक्खै पर था।

आप्णै बी उत भाई बन्धू, गास बणे वैं जान्दे देक्खे।।
देख इसा यो रूप विचित्तर, हक्का-बक्का भौंचक थरथर।
काँप्पण लाग्ग्या डर कैं अर्जन, उकात आपणी बी वो समझ्या।।
बोल्ल्या न्यूँ वो हाथ जोड़ कैं, रूप भयंकर तेरा यो सै।
देख सकूँ नाँ, सह ना पाँदा, रूप दिखा तैं मन्नै वो ए।।

रूप समेट्या किरसण नै वो, बण क्यँ किरसण फिर तैं आए।
बोल्ले उस ती, 'छोड खुदी तैं, काया माया ममता तज कैं।।
सरणै आ ज्या तैं उस प्रभु की, सबै तह्राँ के दुक्खाँ तैं तैं।
छूट परम सुख पावैगा इब, सास्त्र बताए करम सबै कर।।
जो तेरै बस मैं नाँ, उन की, चाहत तज तैं करतब आप्णा।
छत्री का जो ईब करण नै, स्याम्हीं आज खड्या सै, वो कर'।।
ओकात निरख आप्णी, स्याम्हीं, खड़े सबै की अर दुनियाँ की।
सरण लेण का रस्ता पा कैं, समझ्या अर्जन हाथ जोड़ कैं।।
बात मान ली किरसण की थी, अर था न्यूँ वो बोल्ल्या अर्जन।
भाज्ज्या मेरा मोह किसन सै, जो मैं भूल्ल्या आज तईं था।।
आया आप्णा रूप याद वो, किरपा तेरी पा कैं किरसण।
टिक ग्या मैं सूँ एक बात पै, सांसा सङ्का रहे किमे नाँ।।
ईब करूँगा कहणा तेरा, कह न्यूँ उस नै ली अँगड़ाई।
धनुस हाथ मैं फेर उठाया, मूञ्छाँ पै दे ओर मरोड़ी।।
सूरज बरगा मुँह वो ले कैं, बैठ अरथ पै सिँह ज्यूँ गरज्या।
मोहन नै बी मीट्ठी-मीट्ठी, जगमोहन मुस्कान लिये।।
बैठ अरथ पै मुरळी की सी, तान छेड़ दी, टिटकारी दे।
घोड़े आप्णे त्यार करे अर, फेर मोरचै पै आ आप्णा।।
खड़्या अरथ था कर्या, उठै वो, सीन्ना ताण लखे थे दुस्मन।
पहल्याँ लाग्गैं थे जो आप्णे, वैं ए देक्खे आँख काढ कैं।।

१९ गीत्ता का यो सार कह्या सै

अर्जन नै लख स्याम्हीं आपणे, सारै प्यारे मरणै खात्तर।
ज्यान हथेळी पै ले कट्टे, दया मेर तैं उन पै होई।।
राज-पाट अर सुख की खात्तर, इन नै झौंक्काँ युद्धकुण्ड मैं।
घम्मसघाणी कुणब्याँ की हो, मैं नाँ भागी होऊँ इस मैं।।
गेर धनुस वा रथ कै पाच्छै, आराम करण कै ठाँ बैट्ठ्या।
तरक युक्ति दे वो किरसण नै, समझाया भोत्तै जतनाँ तैं।।
अर्जन का पर मन नाँ मान्न्या, सुवाल भोत-से ऊट्ठे मन मैं।
किरसण जी नै खूब ध्यान तैं, उन सब का ए तोड़ कर्‌या।।
पहल्याँ तो हाँस्सी मैं उस की, बात उडाई, नाँ वो मान्न्या।
माया ममता मन तैं उस कै, काड्ढण खात्तर मरण जीण का।।
ग्यान बताया ब्रह्म ततव का, काया मैं अर जीवात्मा का।
'मरणाँ जीणाँ काया का सै, उन नै मरणा जिन नै जीणाँ।।
उन का तैं के सोच करै सै', लाम्बी लाग्गी बात किसन की।
अर्जन कै वा समझ न आई, दुनियाँदारी समझ किसन नै।।
अपजस निन्दा जग मैं होगी, तेरै आग्गै सीस झुकावैं।
वै बी तेरी हाँस्सी करदे, कायर यो सै रण तैं भाज्ज्या।।
लोग कहैं गे छोट्टे-मोट्टे, मरणैं तैं के कम यो हो गा।
या बी युक्ती काम न आई, अर्जन ने इस पै कान धर्‌या नाँ।।
करणाँ बी जो करणाँ नाँ हो, करमयोग की राह बताई।
फळ की मन मैं चाहत ले कैं, करम करैं नाँ, फळ की खात्तर।।
करम कर्‌या यो इसै भाव तैं, बाँध सकै नाँ माणस नै सै।
बणी रहै या काया जिन तैं, वै तो सब नै करणे हों सैं।।
जघाँ बखत अर व्यक्ति घण्याँ कै, हित कै खात्तर करणे जो सैं।
धर्मसास्त्र अर कानून कहे, वैं बी सब नै करणे हों सैं।।
किमे निमित तैं करणे पड़ ज्याँ, वैं बी सारे करणे हों सैं।

नहीं करै जो माणस ये सब, दुनियाँ चाल्है किस तह्वियाँ या।।
सारे ए यैं करणे चहियैं, मैं अर ममता राग भाव तज।
जुध बी तेरा करम फरज सै, कर तैं जुध इब राग द्वेस तज।।
व्यक्ति समाज का हित नाँ हो, बलक बुराई जिस तैं होवै।
इसा करम नाँ करणाँ चहिये, ईब लड़ाई तजणाँ यो सै।।
हार जीत नै मन मैं नाँ रख, धनुस उठा अर लड़ ज्या अर्जन।
हार जीत मैं दोन्नूँ मैं ए, लाड्डू तेरै हात्थाँ मैं सैं।।
हारै गा तो इन्द्रदेव रै, फूल हार तैं स्वागत कर कैं।
आपणै सेत्ती निज आस्सण पै, पहल्याँ तन्नै बैठावैं गे।।
प्राण हरण कर जुद्धकुण्ड मैं, दुस्मन आप्णे होम्मैगा जो।
उन नै सुरग प्हुँचाणै का तैं, पुन अर जस जग मैं पावै गा।।
पुरख्याँ की या धरती थारी, हो गी, इस पै राज करो गे।
परजा नै दे सुख अर सुबिधा, दुस्टाँ तैं कर उन की रच्छा।।
निर्मल पुण्य भगीरथ जी की, गङ्गा-सा थम पाओ गे।
धरमस्थापना धरमपुत्र का, लक्स्य जीत कैं पूर्ण करो गे।।
करमयोग बी अर्जन कै मन, बैठ न पाया, 'फळ नाँ चहिये।
फेर करूँ क्यूँ करम घोर मैं?', इस पै किरसण जी नै उस तैं।।
ईस्स्वर पै तज करम करण की, परसोतम की सरण जाण की।
भगति भाव की बात कही अर, योग ध्यान की, कई तह्वाँ के।।
यग्ग्याँ की बी बात बताई, 'इस दुनियाँ मैं परमेसर सै।
किस-किस तह्वियाँ बैठ्या सब मैं', या बी उस नै बात बताई।।
सुणी पुराणी बात किसन की, अर्जन कै मन नै हला गई।
बिस्वास बँध्या नाँ, पर इस पै, बिराट् प्रभू का रूप देख ल्यूँ।।
इच्छा उस कै मन मैं होई, करी प्राथना 'ईब दिखा दे।
रूप ईसरी मन्नै किरसण', 'इन आँक्ख्याँ तैं नाँ देक्ख्या जा।।
दिब्ब्य द्रिस्टि मैं तन्नै द्यूँ सू, उस तैं लख तैं रूप ईसरी'।

कह किरसण नै रूप दिखाया, साब्बत दुनियाँ उस कै मुँह मैं।।
गळगप होन्दी देक्खी उस नै, जोद्धे बड्डे बीर महारथ।
ब्यासक्रिपा तैं सञ्जै ए यो, देख सक्या, अर बोल सक्या था।।
मेरै बरगै की के गिणती, कह जो पाऊँ उस नै मैं इब।
अर्जन नै यो भोत अजूबा, पहले देक्ख्या नहीं किसै नै।।
देक्ख्या था यो किसनक्रिपा तैं, घबरा बोल्ल्या आकुल व्याकुल।
'सह नाँ पान्दा इसा रूप मैं, वो ए मन्नै रूप दिखा तैं'।।

मन्नै बी तो या ए दुनिया, प्यारी लाग्गै नाँ मैं चाहूँ।
इस तैं छुट्टी ब्रह्मरूप बी, जो यो मन्नै कर दे किरसण।।
मैं तो राज्जी बण्या मनसुखा, मूरख प्राणी टेड्ढा-मेड्ढा।
त्रिगुण जेवड़ी-बुणी खाट पै, पड़्या-पड़्या मैं मगन रहूँ बस।।
रज तम इस के दुखी करैं नाँ, सेस बली यो सत गुण होवै।
बिस्णू-सा मैं सुख तैं सोऊँ, करतब आप्णै सारे करदा।।

देख प्रभू का रूप ईसरी, ओकात समझ आप्णीं आई।
भगती की राह समझणै नै, अर्जन कै मन उमड़े-घुमड़े।।
स्वाल मेघ थे, भोत किसन नै, उन का सब का रस्ता काड्ढ्या।
भक्तिमार्ग बी खोल बताया, ईस्स्वर मैं आप्णा मन ला ले।।
बुद्धी बी ईस्स्वर मैं धर ले, करमाँ नै कर अर्पित मन्नै।
तेरा मैं उद्धार करूँ गा, होळे-होळे लाग भगति पै।।
करमफळाँ की नाँ इच्छा कर, सब मैं मन्नै देक्खैगा जिब।
द्वेस करैगा किस तैं किस बिध, 'मैं' अर 'मेरा' छूट्टैं दोन्नूँ।।
दुस्मन तेरा नाँ हो कोए, मित्र हितैसी लाग्गैं सब गे।
इस कै पाच्छै किरसण जी नै, ब्रह्माण्डभाण्ड का सार कह्या।।
खेत जगत् यो सारा ए सै, सत् रज तम सैं माट्टी इस की।
अब्ब्यक्त, बणी नाँ दुनियाँ जिब या, परगट नाँ ये सारे गुण थे।।
समता स्थिति मैं सारे गुण थे, ईस्स्वर की लीला, माया तैं।

समता तज ये बिसम बणे अर, 'महद्' जगत् का कारण बण गे।।
प्रतिभान, जगत् की बुद्धि बणी, न्यारे-न्यारे परगट होए।
मैं सूँ सत, मैं रज, तम मैं सूँ, 'मैं' यो बण ग्या तीन तह्याँ का।।
भक्तिमार्ग के बन्दे इन नै, बिस्णू, ब्रह्मा, सिव सैं कहँदे।
हङ्कार बण्या पाँच भूत ये, सुद्ध अमिस्रित पाँच ततव ये।।
होई सारी स्रिस्टी इन तैं, मिल गे जिब ये आप्पस मैं सब।
काया बण ये परगट होवैं, उस मैं परगट इन्द्री सारी।।
करम ग्यान की पाँच पाँच अर, इन कै ऊप्पर सूक्सम मन बी।
सब तैं ऊप्पर बुद्धी राणी, ब्रह्मरन्ध्र मैं बैट्ठी सब पै।।
राज करै या निर्मल सात्त्विक, इस मैं झळकै जीवात्मा सै।
मालिक पूरै खेत्तर का यो, जाणै इस का खूड-खूड यो।।
सारा मिल 'सङ्घात' देह सै, इस मैं होवै ध्रिती चेतना।
जिस तैं टिकदा देह खेत यो, चेतन बी यो होवै इस तैं।।
मन नै भावै, उस नै चाह्वै, नाँ भावै उस तैं द्वेस बणै।
राग द्वेस यैं मोह सोक दें, सिसिर कदे आ हाड कँपावै।।
बसन्त कदे दे जीवन ऊस्मा, खेत खेत का मालिक न्यूँ ए।
अळझे-पुळझे ह्वैं सैं दोन्नूँ, भेद खेत का पर जो समझे।।
आत्माराम रहै वो सुखिया, बोवै काट्टै आप्णै मन तैं।
नाँ ए बँधदा इन मैं सब मैं, ताण रजाई सोवै सुख तैं।।
कर दे अर्पित मन्नै सारा, खेत जगत् का मोज्जाँ कर तैं।
इस की खात्तर तीन गुणाँ की, तीन जेवड़ी जो ये इन तैं।।
छूट्टण की तैं कोसिस मैं लग, सतगुण बान्धै ग्यान सुखाँ तैं।
रजगुण बान्धै त्रिस्णा तैं अर, करम करा कैं चैन छीनदा।।
तम गुण बान्धै अग्ग्यान अन्धेरा, ओर निकम्मा माणस नै कर।
मोह भरम सै पैदा करदा, करतब सूज्झै उस मैं नाँ कुछ।।
गुण नाँ करदे, उन नै तैं नाँ, आप्णी करणी समझ कदे बी।

कदे जेवड्ी कोए बान्धै, माणस नै सै, मुकत सदा वो।।
जलम मरण ए उसका नाँ हो, ओर दुक्ख तो हौं गे कित तैं।
इस दुनियाँ नै रै अर्जन, तैं तो, उल्टा लटक्या पेड समझ ले।।
जड़ सै इसकी ऊप्पर कान्हीं, अव्यक्त प्रक्रिति मैं, फैल्ल्या नीच्चै।
आसक्ति सूत्र पै टिक्या खड्या, काट अनासक्ति कुहाड़ै तैं।।
ओर सहारा ले ले उस का, इस तैं ऊप्पर परम पुरुस जो।
एक बात तैं ओर समझ ले, दो तह्वियाँ की चीज जगत् मैं।।
ग्यान प्रकास च्यानणाँ कर दी, काया बरगी स्थूल चीज तैं।
ऊप्पर होंवैं, इत नाँ रमदी, सिरफ सुखी हों आनँद पावैं।।
असुआँ, प्राणाँ, प्राण धारदी, काया मैं ए रमे रहैं सै।
कुछ नाँ देक्खैं इस तैं ऊप्पर, 'मैं' अर 'मेरे' दो ए भावैं।।
प्रकास च्याँनणाँ ले कैं पैदा, होया सै तैं, चिन्त्या नाँ कर।
कायापुर के तीन दुरज्जे, नरकपुरी नै जाणैं के सैं।।
चाहत, गुस्सा, लालच तीज्जा, इन तैं बच कैं रहणाँ चहिये।
तीन्नूँ ए यैं बन्द करण नै, सास्त्रबिधी की लगा किवड़िया।।
चाहत गुस्सा लालच इन तैं, दूर रहै गा माणस रै न्यूँ।
सास्त्रबिधी पै टिकाँ किस तह्वाँ?, यो मैं रस्ता आज बताऊँ।।
किम्मे नाँ हो बिन सर्धा कै, सर्धा या सै तीन तह्वाँ की।
सतोगुणी अर रजोगुणी बी अर, तमोगुणी या तीज्जी हो सै।।
जिसै तह्वाँ की सर्धा जिस की, उसै तह्वाँ का माणस होवै।
यग तप पूजा दान करम सब, सर्धा तैं ए माणस करदा।।
ओर कहूँ के, खाणाँ-पीणाँ, यो बी करदा सर्धा तैं ए।
ग्यान च्याँनणाँ जिस मैं होवै, तन मन बुद्धी बल बढदे।।
वैं यैं सारे सात्त्विक होवैं, आप्णै ओर पराये तन नै।
मन नै बी जो कस्ट प्हुँचाँदे, ढोंग दिखावा कर कैं होन्दे।।
वैं यैं सारे रजोगुणी सैं, विधि-विधान नै तोड़-मोड़ कैं।

कस्ट प्हुँचा कै ओराँ नै अर, आप्णा सुख ए देख हठाँ तैं।।
अपमान उपेक्सा ओराँ की कर, जघाँ बखत नाँ देख कुपात्तर।
खात्तर जो हों, तमोगुणी वैं, इन नै सब नै देखभाळ कैं।।
सब गुण आळी सर्धा रख तैं, 'ओम' सबद तैं कह्या ब्रह्म जो।
उस मैं सर्धा आप्णी रख कैं, 'तद्' वो ए 'सत्' तैं अर हो ज्या।।
असद् बुरा जो इन तैं उल्टा, नास करै गा सब का, वो तैं।
बिन सर्धा कै करणाँ सारा, छोड बचा ले खुद नै माणस।।
न्यूँ ए तेरा उद्धार सदा हो, गीत्ता का यो सार समझ ले।
मोह सोक तैं हो जो बन्धन, मन जो बँधदा दुक्ख भरम मैं।।
उस तैं गीत्ता सरू करी थी, ओर समापत ईब करी न्यूँ।
मोक्स बणै सै त्याग कर्यैं तैं, सुख दुख बन्धन पड़ कैं माणस।।
करमाँ नै कर किसै भाँत तैं, फळ की आसा रख न करे ज्याँ।
इसे करम नाँ करणाँ हो सै, त्याग कुहावै सन्न्यास सही।।
न्यूँ ए सारे करमाँ का फळ, छोड करै जो करम त्याग वो।
जिस मैं कोए दोस बुराई, होवै वो नाँ करणाँ चहिये।।
जघाँ बखत नै जाण पात्र नै, देवाँ बरगे ग्यान्नी जन का।
मान अर्चना यग्ग्य दान तैं, बाणी तैं अर कर कैं बन्दन।।
तन मन आप्णा कस्ट सहण तैं, कुन्दन करणाँ, बिना खोट का।
करम सबी इस तह्वियाँ के जो, करणे ए चहियैं नाँ छोड्डै।।
करणैं जो बी ओर करम सैं, करणैं चहियैं वैं बी सारे।
फळ की इच्छा उन तैं नाँ रख, 'मैं' अर 'मेरा' भाव छोड कैं।।
सास्त्र समाज तैं निस्चित जो सैं, बिधिबिधान तैं वै बी करणे।
जो नाँ त्यागी, करमलिपत सैं, फळ नै चाह् कैं करम करैं सैं।।
तीन तह्वाँ का फ्ळ यो उन का, चाह्या, अनचाह्या, मिल्या-जुल्या।
करम करण नै पाँच जरूरी, काया, आस्रै, कर्ता, कारक।।
तन मन वाणी की चेस्टा अर, निमित पाँचमाँ प्रारब्ध करम।

खुद नै ए समझ करणियाँ यो, अभिमान पाळना ठीक नहीं।।
ग्यान करम अर कर्ता तीन्नूँ, तीन गुणाँ तैं तीन तह्वाँ के।
सब मैं समझै एक ततव नै, 'एक्कै मैं सूँ ब्यापत सब मैं'।।
सतोगुणी या समझ मनुख की, न्यारैपण की, भेदभाव की।
तेर मेर की, इस की उस की, समझ राजसी फूट करावै।।
एक किसै अर भौतिक नै जो, पूरण मान्नै परमात्मा-सा।
समझ तामसी वा या हो सै, न्यूँ ए बुद्धी धीरज दोन्नूँ।।
तीन भाँत की तीन गुणाँ तैं, आच्छै माडै नित्त अनित का।
फरक करावै सब बुद्धी सात्त्विक, आप्णै मन के भावाँ कारण।।
धरम'र अधरम दोन्नूँ नै ए, सही न समझै, करणजोग नै।
नाँ जो करणाँ उन नै माणस, आप्णी इच्छा, आप्णा स्वारथ।।
ऊप्पर राक्खै बुद्धी राजस, आप्णै अग्गयान अँधेरै कारण।
अधरम नै जो धरम समझदी, बात्ताँ नै जो उल्टा लेवै।।
बुद्धी हो सै तमोगुणी वा, इन समझाँ नै टेक्के राक्खै।
धीरज वा सै उसै तह्वाँ का, सुख बी न्यूँ ए तीन तह्वाँ का।।
पहल्याँ लाग्गै झैर जिसा पर, पाच्छै लाग्गै इमरत बरगा।
धर्‌या आँवळा जीभ नौंक पै, लगै कसैल्ला, पाच्छै मीट्ठा।।
समझ आपणी निर्मल हो जिब, होवै सुख यो माणस नै सै।।
पहल्याँ सुख जो इमरत बरगाा, झैर जिसा जो पाच्छै होवै।
बिसयाँ तैं इन्द्रिय जिब जुड़दी, होवै सुख यो रजोगुणी सै।।
पहल्याँ बी अर पाच्छै बी जो, बुद्धी नै सुख भरमावै।
सोणै आळस गफळत मैं हो, तमोगुणी वो सुख सै होवै।।
भाई, या तैं बात जाण ले, दुनियाँ मैं सै किमै इसा नाँ।
इन तीन्नूँ तैं बँध्या पड्‌या नाँ, माणस जो ये सब तैं आच्छा।।
दुनियाँ मैं खुद नै समझैं सैं, यें बी सारे बँधे पड़े सैं।
तीन्नूँ ए इन जेवड़ियाँ तैं, जलम लेण तैं आक्खर ताईं।।

बँधे खड़े निज करम करैं सैं, सुभा करम तैं हटदे नाँई।
कोए माणस सान्ति सील रख, इन्द्री आप्णी काबू मैं रख।।
ओराँ का ए भला करण नै, भूख प्यास अर सर्दी गर्मी।
छमा सरळता सुच्चापण अर, ग्यान बिग्यान'र आस्तिकता रख।।
ब्रह्म बणन के करम करैं सैं, इस कारण ए वैं ब्राह्मण हों सैं।
जलम समै तैं इसे भोत-से, माणस होवैं जुलम सहैं नाँ।।
सङ्घर्साँ तैं कदे न हारैं, क्सत् तैं हानी कस्ट बिपत् तैं।
दीन-हीन की रच्छा करदे, छतरी बण कैं, सदा बचावैं।।
खेती-बाड़ी पसुपालन अर, माळ बणा कैं वाणिज करदे।
रोजी-रोटी लत्त्याँ तैं सैं, सब कै तन की पुस्टी करते।।
निवास सभी सै देस बिस्व का, उनकी ए या जिम्मेदारी।
आप्णी-आप्णी जाग्घाँ रहँदे, माणस सारे सुख तैं बैट्ठैं।।
इसा सुभा बी जलम समै तैं, पा कैं माणस बणदे बणियैं।
ओर मनुख सैं भोत इसे जो, इन सब तैं जुड़ सहयोग करैं।।
तीन्नूँ आप्णा काम करैं सैं, इन कै घोर परिस्स्रम बळ तैं।
आप्णे-आप्णे बण्यै सुभा तैं, काम आपणे करदे रहणाँ।।
सेवा या सै परमेसर की ए, देख दूसरै नै नाँ ललचा।
आप्णाँ-आप्णाँ करम करो सब, जीवन पूरा सफळ बणै गा।।
जो तो माणस 'मैं' मैं आ कैं, सुणै बात नाँ आपणै हित की।
आप्णैं तैं बी ऊप्पर हो कैं, करम आपणाँ छोड्डै सै रै।।
बकरी ज्यूँ, न्यूँ 'मैं', 'मैं' करदा काळ बली की भेंट चढैगा।
ईस्स्वर बैट्ठ्या सब कै हिरदै, म्हारी डोरी लिये मुरारी।।
नाँच नचावै सब नै सै वो, कठपुतळी-से हाम् सारे साँ रै।
उस की ए तैं सरण पकड़ ले, स्यान्ति परम तन्नै मिल ज्या गी।।
प्रापत कर कैं ग्यान परम यो, आपणै मन तैं पूछ करो जो।
तेरै मन नै आच्छा लाग्गै, मैं तो तन्नै यो ए कहँदा।।

मन तैँ आप्णाँ मेरा कर ले, मेरै आस्रित हो ज्या पूरा।
जो बी किम्मे करै करम तैँ, यग्य भाव तैँ कर वैँ सारे।।
मन्नै ए तैँ आ ज्या गा रै, बचन भरूँ सूँ यो मैँ तन्नै।
एक बात मैँ ओर बताऊँ, इसै किसै नै नाँ यो कहणाँ।।
नहीँ तपस्वी हो जो माणस, आस्रित होणाँ जो नाँ जाणै।
सुणनाँ बी जो चाह्वै नाँ ए, राग द्वेस से भाव भर्‌या जो।।
काड्डै खोट जगत् मैँ, सब मैँ, आप्णी कमियाँ देक्खै नाँ जो।
माणसकाया धारण करदै, इसै पसू नै नाँ ए कहणाँ।।
हाँ, जो करदे मेरी भगती, जिन नै आप्पा सौँप्या मन्नै।
इसे जण्याँ नै कहणाँ भाई, बोई उर्वर भू पर पाणी।।
अर्जन, गुमसुम बैट्ठ्या क्यूँ सै?, ध्यान लगा कैँ सुण्या'क नाँ यो?
भाज्ज्या नाँ अग्ग्यान मोह के?, बोल्ल्या अर्जन किरसण तैँ न्यूँ।।
तेरी किरपा पाँ कैँ मेरा, अग्ग्यान अँधेरा मोह गया।
भूल्ल्या मैँ था खुद नै जो वो, याद आज वो मन्नै आया।।
बिचळ्या नाँ मैँ ईब रह्या सूँ, टिक्या खड्‌या सूँ पाँव जमाए।
सङ्का संसै सारे भाज्जे, तेरा कहणाँ ईब करूँ गा।।

अर्जन किरसण दोन्नूँ का यो, सँबाद अजूबा ओर नजारा।
आँक्ख्याँ तैँ सुण कान्नाँ तैँ लख, भोत खुसी तैँ आप्पा भूल्ल्या।।
बोल्ल्या कुरुकुलकेतु आँधळै, बाहर भीत्तर दोन्नूँ तह्वियाँ।
गम्फी बाँध सिँहासन बैट्ठ्चै, ध्रितरास्टर नै सञ्जै निर्भै।।
मन हो जिस कै कहणै मैँ वो, किरसण बरगा ग्यान देणियाँ।
अर्जन बरगा ओर धनुर्धर, जित ये दोन्नूँ होवैँ कट्ठे।।
उत आ बैट्ठै पीड्ढा घाल्लैँ, लिछमी देवी बणी सहारा।
उत्तै होवै बिजै सदा ए, होवै सब जो होणाँ चहिये।।
सब तैँ ऊप्पर अटल नीत हो, यो सै मेरा ईब मानणाँ।
हाम् नै सब नै गीत्ता जी या, मात्थै ला नाँ धरणी चहिये।।

मात्थै भीत्तर, इन्द्रिय, मन अर, बुद्धि धाम मैँ धरणी चहिये।
बुद्धि धाम मैँ धरणी चहिये, धरणी चहिये, चहिये, चहिये।।

२० गीत्ता किसकै खात्तर बोल्ली?

बेद्दाँ का बिस्तार करणिये, रिसी ब्यास नै म्हाभारत मैँ।
गीत्ता का उपदेस कर्‌या सै, अर्जन खात्तर सिरफ नहीँ सै।।
'भाई-बन्धू देख लड़ण नै, स्याम्हीँ आ कैँ खड़े अड़े जो।
अर्जन का मन कमजोर पड़्या, वा ए कमजोरी दूर करण नै।।
गीत्ताग्यान दिया था उस ती', मोट्टी बात समझदे सारे।
या ए इतणी बात नहीँ सै, बल्की सारे बखताँ देस्साँ।।
इस हाल पड़े सब लोग्गाँ नै, या कमजोरी जिब आ घेरै।।
इस तैँ मुकत करावै यो सै, मानवता का उपकार करै।
'स्रीमद्-भगवद्-गीत्ता' या सै, बात सिखावै सब कै हित मैँ।।
इस की व्याक्ख्या माँ की लोरी, पाई सँग हरियाणी मैँ मैँ।
टूट्टी-फूट्टी छन्द बिधा मैँ, गुरूक्रिपा तैँ ततव समझ कैँ।।
सर्धा और परिश्रम धन तैँ, धन सूँ होग्या सिवनारायण।
इसा सास्त्र यो व्यक्ति, समाजी, जीवनदर्सन समझावै सै।।
रहणा-सहणा, खाणा-पीणा, करम किसे, किस तह्वियाँ करणे।
सुभा मनुख का, सर्धा, भगती, ओर देवते किसे मनुख के।।
धरती कै इस परदै ऊप्पर, होवैँ सब यो ग्यान बताया।
जीवन होवै सुखमय नर का, यो जीवनबिग्यान बताया।।
लाग्गै एकातम दुनियाँ, लाग्गै सारी एक्कै घर-सी।
लील्ली छतरी नीच्चै सारी, एक्कै धरती माँ या सब की।।
माँ नै चाह्वैँ टाब्बर उस के, आप्णै मैँ सिमटे, बँटदे।
रहैँ झगड़दे अर वैँ लड़दे, आप्पा-धाप्पी पाच्छै लाग्गे।।
'प्यार-मुहब्बत आप्पस मैँ सब, सुख-दुख बाँड्डैँ, सामिल होवैँ।'
या ए इच्छा सब की माँ की, म्हारी माँ बी या ए चाह्वै।।

'गीत्ता' बी सै माँ ए बरगी, ग्यान समझ दे पहली गरु या।
ब्याक्ख्या कर कैं मैं बी गरु न्यूँ, बण ग्या मनसुख सिवनारायण।।

२१ गीत्ता मैं कितणे स्लोक कहे सैं

भारत का जो बिस्वकोस सै, नाम 'महाभारत' उस का सै।
'भीसम' परब कह्या जो उत सै, उत तेरा तैं ब्याळिस ताईं।।
'स्रीमद्-भगवद्-गीता' नाँ तैं, छोट्टा परब बणाया रिसि नै।
'भीस्म परब' कै पच्चिसमैं तैं, ब्याळिस ताईं गिण कैं ठारा।।
अद्ध्यायाँ मैं गीत्ता बाँधी, 'भीस्मपरब' त्तित्ताळिसमैं मैं।
गीत्ता कै स्लोक्काँ की गिणती, सात सै पैंताळीस हो सै [१]।।

पर यो स्लोक नहीं ए मिलदा, कई पराणी पाण्डुलिपी मैं।
कइयाँ मैं अर पाया जा सै, परमाणिक नाँ यो सै इस तैं।।

२२ गीत्ता मैं सैं श्लोक सात सै

गिणती बी या नाँ परमाणिक, जगद्गरू स्रीसङ्कर जी नै।
कही सात सै स्लोक्काँ आळी [२], गीत्ता के टीक्काकाराँ मैं।।
आनन्दगिरी, नीलकण्ठ अर, स्रीधरस्वामी धनपति जी नै।
स्वामि सुरस्ती मधुसूदन नै, आप्णी आप्णी टीक्क्याँ मैं सै।।
स्लोक बखाणे सात्तै सै सैं, जगद्गरू रामानुज जी नै।
स्लोक्काँ की गिणती नहीं कही, भास्स्य लिख्या पर सात्तै सै पै।।
गीत्ता की आज छपी पोत्थी, परमाणिक जे मान्नी जाँ सैं।
सैं सात सै ए स्लोक उन मैं, घाट-बाध नाँ परमाणिक सै।।

---

१. षट् शतानि सविंशानि, श्लोकानां प्राह केशवः।
अर्जुनः सप्त पञ्चाशत्, सप्त षष्टिं तु सञ्जयः।
धृतराष्ट्रः श्लोकमेकं, गीताया मानमुच्यते।। भीष्म पर्व ४३। ४

२. तं धर्मं भगवता यथोपदिष्टं वेदव्यासः सर्वज्ञो भगवान् गीताऽऽख्यैः
सप्तभिः श्लोकशतैरुपनिबबन्ध। गीताभास्स्य का उपोद्घात

२३ किस अध्या मैं सैं अर कितणे

ब्यास रिसि नै गीत्ता कै किस, अध्या मैं कितणे स्लोक कहे।
गिण कैं उन नै ईब बताऊँ, पहलै अद्ध्याय मैं सैंताळिस सैं।।
पर निर्णैसागर तैं छप्पी, टीका आठ सहित पोत्थी मैं।
छब्बिसमाँ अर कत्तिसमाँ सैं, स्लोक दिखाए छह कलियाँ के।।
अर न्यूँ इस मैं छ्याळिस सँख्या, च्यार पाद का छन्द अनुस्टुप।
सै मर्यादा छन्दसास्त्र मैं, इस तैं सैंताळिस ए यैं सैं।।
देक्खो उस तैं नै गिणती पूरी, स्लोक सात सै उस तैं हों सैं।
ठारा अद्ध्या मैं स्लोक्काँ का, ब्यौरा नीच्चै ईब दिया सै।। [१]

२४ किस के कितणे स्लोक उरै सैं

म्हाभारत मैं किरसण जी के, छैः सै बीस बताए सब सैं।
सत्तावन स्लोक्का मैं आप्णी, बात कही सै अर्जन नै अर।।
सञ्जै का कहणा सडसठ मैं, एक कह्या सै ध्रितरास्टर नै [२]।
न्यूँ सात सै पैंताळिस हो सैं, कही बात या ऊप्पर खुल कैं।
आचार्याँ टीक्काकाराँ नै, पाठ बखाण्या, प्रामाणिक उस।।
सात् सै स्लोक्काँ की गीत्ता मैं, ध्रितरास्टर नै बोल्ल्या पहला।।
सुण्यैं गयै सञ्जै कै मुँह तैं, लिकड़ी सारी गीत्ता जो वा।
इन छैः सै निन्नयाणवै मैं बी, कितण्याँ मैं किस नै आप्णी।।
बात कही थी, इस की गिणती, ईब बताऊँ उन नै गिण कैं।
बत्तीस कहे सैं सञ्जै नै [३], दुर्योधन नै नो स्लोक्काँ मैं।।
गुरु द्रोण तैं बात करी थी [४], अर्जन नै बी आप्णा मन्तब।

---

१. अध्याय १ मैं ४७, २ मैं ७२, ३ मैं ४३, ४ मैं ४२, ५ मैं २९, ६ मैं ४७, ७ मैं ३०, ८ मैं २८, ९ मैं ३४, १० मैं ४२, ११ मैं ५५, १२ मैं २०, १३ मैं ३४, १४ मैं २७, १५ मैं २०, १६ मैं २४, १७ मैं २८, १८ मैं ७८ = ७००।

२. षट् शतानि सविंशानि, श्लोकानां प्राह केशवः।
अर्जुनः सप्त पञ्चाशत्, सप्त षष्टिं तु सञ्जयः।
धृतराष्ट्रः श्लोकमेकं, गीताया मानमुच्यते।। भीष्म पर्व ४३। ४

३. गीत्ता १.२, १२-२०½, २४-२७½, ४७ (१६); २.१, ९-१० (३); ११.९-१४, ३५, ५० (८); १८. ७४-७८ (५) = ३२।

४. गीत्ता १.३-११ = ९।

चोरास्सी स्लोक्काँ मैं अर था, कर्‌या प्रकासित किरसण ताईं [१]।।
च्यार बेद का सार बताया, सात रिसी नै सुमिरण कर कैं।
कामदेव कै तरकस के सब, बाण भोथरे करणाळै अर।।
अच्युत नै जो स्लोक कहे सैं, समझो या तम्ह सिर खुजळा कैं। [२]
सरण पड़्याँ नै खुलै हाथ तैं, अभय देणियै गडुवाळै उस।।

२५ गीत्ता के स्लोक्काँ का ब्योरा

अध्याय	ध्रितरास्टर	दुर्योधन	सँजै	अर्जन	क्रिस्ण	योग
१	१	९	१६	२१	...	४७
२	...	...	३	६	६३	७२
३	...	...	...	३	४०	४३
४	...	...	...	१	४१	४२
५	...	...	...	१	२८	२९
६	...	...	...	५	४२	४७
७	...	...	...	...	३०	३०
८	...	...	...	२	२६	२८
९	...	...	...	...	३४	३४

१. इक्किसमैं, अट्ठाइसमैं के, उतराध कहै अर्जन नै सैं।
स्लोक तिरास्सी ओर कहे सैं, गिण कैं उन नै न्यूँ इब समझो:-
गीत्ता १.२२-२३, २९-४६ (२१); २.४-८, ५४ (६); ३.१-२, ३६ (३); ४.४ (१); ५.१ (१); ६.३३-३४, ३७-३९ (५); ८.१-२ (२); १०.१२-१८ (७); ११.१-४, १५-३१, ३६-४६, ५१ (३३); १२.१ (१); १४.२१ (१); १७.१ (१); १८.१, ७३ (२) = ८४।

२. २.२-३, ११-५३, ५५-७२ (६३); ३.३-३५, ३७-४३ (४०); ४.१-३, ५-४२ (४१); ५.२-२९ (२८); ६.१-३२, ३५-३६, ४०-४७ (४२); ७.१-३० (३०); ८.३-२८ (२६); ९.१-३४ (३४); १०.१-११, १९-४२ (३५); ११.५-८, ३२-३४, ४७-४९, ५२-५५ (१४); १२.२-२० (१९); १३.१-३४ (३४); १४.१-२०, २२-२७ (२६); १५.१-२० (२०); १६.१-२४ (२४); १७.२-२८ (२७); १८.२-७२ (७१)= ५७४

१०	...	...	...	७	३५	४२
११	...	...	८	३३	१४	५५
१२	...	...	...	१	१९	२०
१३	...	...	...	...	३४	३४
१४	...	...	...	१	२६	२७
१५	...	...	...	...	२०	२०
१६	...	...	...	...	२४	२४
१७	...	...	...	१	२७	२८
१८	...	...	५	२	७१	७८
	१	+ ९	+ ३२ +	८४	+ ५७४	= ७००

२६ मनसुख नै मन की बात कही

आप्णै मन की बात कहूँ इब, इब तो किरसण मिल्या खड़्या सै।
पारा अर मन इस कै आग्गै, पाणी भरदे चञ्चळता मैं।।
भाज्जै बी यो भोत तेज सै, तीन बखत यो देक्ख्या मन्नै।
द्रदुपदसुता की लाज बचाणै, भाज्या यो था ले कैं धोत्ती।।
जरासन्ध नै जिब था घेर्‌या, गिरनार गिरी पै भाज चढ़्या।
काळ-यवन जिब पाच्छै पड़ ग्या, भाज्ज्या-भूज्ज्या गुफा छिप्या जा।।

किरसण, तन्नै मैं सूँ खौंच्च्या, सही बखत पै आप्णै कान्हौं।
काया चाद्दर बदलण का यो, मोक्का आया जिब सै मेरा।।
बाळकपण मैं फेर जाण कै, पहल्याँ आपणाँ सात्थी मनसुख।
याद कर्‌या सै किरसण तन्नै, गाई जो थी गीत्ता वा इब।।
मेरै स्याम्हौं धर कैं आप्णी, मीट्ठी बोल्ली फेर सुणा दी।
फरक सिरफ यो इतणाँ ए सै, मुरळी की वा तान पुराणी।।
आँख मूँद कैं कान खोल कैं, सुण्या करूँ था जो मैं पहल्याँ।
वा सै खो गी मुरळी तेरी, सङ्ख गूँजदा कान्नाँ मैं ह्वै।।
चक्कर कर मैं तेरै चाल्लै, घूम्मै सै जो यार मुरारी।

घूँ-घूँ घर-घर दुनियाभर की, लाग्गै सै या मन्नै प्यारी।।
कान फोड़दी इब या सब नै, आच्छी लाग्गै नाँ या भावै।
भोगवाद की बढ़ी प्रव्रित्ती, कान फोड़दे बाज्जे आच्छे।।
लाग्गैं सैं दुनियाँ नै इब ये, तैं तो, बस, इब भारत भर मैं।
सङ्ख बजा दे कर्मबोध का, चक्र चला दे अर तैं आप्णाँ।।
बढ़ी प्रव्रित्ती स्वार्थ, भोग की, डर कैं भाज्जै, इत-उत टोहै।
जघाँ आपणै ल्हुकण बचण की, मैं तो देक्खैं, बैठ्ठ्या बस ज्याँ।।
बाच्छै-बाच्छी तेरे जिसबिध, पहल्याँ बी था देक्ख्या करदा।
तन्नै, किरसण, दुनियाँ मैं सै, हो कैं ब्यापत रहणाँ इस मैं।।
तेरै यो ए भाग लिख्या सै, मन्नै बी तैं इस्सै जग की।
ओणी-पोणी किसै कूण मैं, आप्णै धोरै गेरे रहणा।।
बैकुँठ-वैकुँठ, सुरग-वुरग कुछ, चहिये मन्नै ब्रह्मलोक नाँ।
कैलास, गिरी तो मेरै धोरै, पहल्याँ तैं सै, मर्जी जिब हो।।
भाज चढूँगा, नहीं जरूरत, तेरी किरपा की सै किरसण।
ल्यूँ तेरा अहसान, बता, क्यूँ? तैं, बस, किरसण, इतणाँ, करणाँ।।
कदे बाँसळी,कदे सङ्ख यो, न्यूँ ए सदा बजाँदे रहणा।
तेरी मेरी यारी या रै, रहै चालदी जुग-जुग ताईं।।
रूप बदल कैं आणा फिर-फिर, फितरत तेरी, नियती तेरी।
धरमदीप पै मुरँड जिबै आ, उस की लो नै दाब्बण लाग्गै।।
डर कैं अर उस काळस तैं मैं, चीं-चीं, चूँ-चूँ करूँ मुरारी।
तद तो तन्नै आप्णी बंसी, छोड भाज कैं आणाँ हो गा।।
ले कैं सङ्ख'र चक्कर दोन्नूँ, मेरै धोरै तन्नै किरसण।
जो ये दोन्नूँ गोप्पी कोए, ल्हको-छपो कैं बैठ्ठी होवै।।
रथ का पहिया फिर तैं तन्नै, किरसण इब बी ठाणाँ होगा।
आज छिड़्यै इस म्हाभारत मैं, आप्णयाँ कै ए बाणाँ की।।
सरसैय्या पै पड़ बी मैं तो, प्रबल मगर कै मुँह मैं आए।

उगदै सूरज नै देक्खूँ गा, या इच्छा रख सिवनारायण।।
सात्थी तेरा मनसुख मैं तो, आप्णै जीरण कायारथ की।
रास आपणी तिलड़ी तन्नै, तन्नै ए तो सौप्पूँ गा मैं।।
इब्बै क्यूँ नाँ, यार, मेरे[१] तैं, भारत नै बी आण सँभाळै?
इस कै पाच्छै बखत कोण-सा, इन्हैं सँभाळण का आवै गा?।।

२७ दरखास करूँ पढणाळ्याँ तैं

भोत कह्या सै मन्नै, इब तो, परत नींम की आक्खर की या।
धर कैं ल्यूँ बिस्स्राम ओर जो, तँग कर राक्खे सभी पढणिये।।
मुस्कल तैं जो आज मिलैं सैं, उन नै बी इब मुक्ती देऊँ।
पाणै नै तो, गीत्ता मैं सै, कह्या किसन नै जोर-जोर तैं।।
भास्स्य कहो या ब्याक्ख्या टीक्का, लिख्या मनै सै मेरी बड्डी।।
दही-झाकरी, गेर झेरणी, छोटी-सी जो मेरै पाह् थी।
निर्बल दुर्बल हात्थाँ तैं सै, थम कैं रुक कैं मथ कैं काड्ढ्या।
मक्खन, किम्मे आया अक नाँ, या तो भाई, थम्है कहोगे।।
मेरै तो यो बस मैं इतणाँ, इतणाँ-सा ए, माड़ा-सा था।
मक्खन खा ल्यो जो बी लिकड़्या, पाणी गेर्‌या मन्नै जो सै।।
'मट्ठा बण ग्या यो', न्यूँ समझो, पी ल्यो इस नै भाई छिक कैं।
भीत्तर ताईं त्रिप्ति करै गा, पढ्या भास्स्य जो ग्यान मिलै गा।।
कविताआनँद फोक्कट मैं ल्यो, सुणो किसै तैं, पलकैं झपकैं।
डर चिन्त्या तज ताण रजाई, इस की धुनि अर नाक्काँ मैं तैं।।
लिकड़ैगी या बणी खराट्टे, सोणै का के सात्त्विक आनँद?
जाणो गे थम जाग्यैं पाच्छै, पढ ल्यो इस नै ध्यान लगा कैं।।
गलती मेरी मन्नै बोल्लो, आच्छी बात किमे जो लाग्गै।
ओराँ नै थम खोल बताओ, किरसण जी तैं करो प्राथना।।

---

१. इस पद मैं 'मे' की धुनि सै, एक्कै मात्रा आळी या।
दो मात्रा कै बोल्लण तैं, टूट्टै गा यो प्रथम चतुस्कल।।

मेरै ऊप्पर किरपा राक्खै, कलम चालदी मेरी रहँदी।
मात्ता जी कै हंसै नै मैँ, अक्सरमोत्ती नित्त चुगाऊँ।।

२८ मैँ सूँ सार्थक इन कै कारण

बोझ आपणै सिर का मन का, ईब उतारूँ उन नै सब नै।
कर कैँ, बिनती क्समा करण की, किरपा न्यूँ ए, ईब करी जो।।

सब तैँ पहल्याँ पूज्य पिताजी, ज्योतिस बिद्या ओर ब्याकरण।
पारङ्गत जो दोन्नूँ मैँ थे, जिह्वासण पै रही सुरस्ती।।
डूज्जा ठाड्ढा कान्नाँ मै गो, ज्योतिस बिद्या नाँ ली मन्नै।
पाणिनिविद्या ली थी मन्नै, कान दुरज्जे दोन्नूँ खोल्ले।।
छोट्टे-छोट्टे रोम खिड़कियाँ, सारी मन्नै खोल गिरी थी।
बुद्धिसदन के द्वार खिड़की बी, सारे खोल्ले चोपट पल्ले।।
तन बीण के तार खिँचाए, तबला ओर म्रिदङ्ग बण्या मैँ।
ढोल्लक-सी कड़ बाज्ज्या करदी, सङ्गत सब की इसी बणी जो।।
सारे सुर लय ताल सधे सैँ, कान्नाँ मैँ गूँज्जै सा-रे-गा।
इसे पिता जी गुरु जी एक्कै, तन मैँ ब्रह्मा हरि सिव मिल गे।।

भ्याणी मैँ ए किरसण जी नै, सिरीकिसन बण अङ्ग्रेजी दी।
इस बिद्या नै बिस्वविद्यालै, पूँह्चा कै मैँ गगन चढाया।।

ठारा बरसी याणी बय मैँ, काँस्सी जी मैँ पढण गया जिब।
सारे रिसि आचारज गुरु बण, गिरिधर सर्मा, रघु, अर जग के।।
नाथ समाए, इन तैँ पाई, काब्ब्य सास्त्र अर न्याय सास्त्र की।
बिद्या उत्तम सङ्कर जी की, पाली, प्राक्रित, त्रिपिटक जाणे।।

दिल्ली मैँ सतभूषण योगी, नरेन्द्र चोधरी, सत्यबरत जी।
बणे मिले ये, इन तैँ पाए, बेद निरुक्त, महाभास्य बी।।

किरसणभूमी गुर्जरदेसे, नगर बड़ोदा मैँ मिल गे।

मणिसङ्कर जी नै वैदिक भासा, योग ब्याकरण बेदान्ताँ की।।
गाँठ खोल कैँ धर दी सब की, मित्र मिले अरुणोदै जानी।
गुर्जरभास्सा सीक्खी उत थी, बरस एक जो रह्या उठै था।।

बण्या अध्यापक दिल्ली मैँ जिब, बी०ए० भगवद् दत्त मिले उत।
पूज्ज्य परम मम भगवद् दत नै,'बहँदी हरदम रहे सुरस्ती'।।
पाठ पढाया उन नै यो था, इन कै रस्तै तैँ मैँ चल कैँ।
कर पाया सूँ बेद सास्त्र मैँ, जो कुछ मन्नै कर्‌या धर्‌या सै।।

न्यूँ ये सारे गुरुजन मेरे, छोट्टी मोट्टी मति कै नभ मैँ।
सूरज चन्दा नच्छत्राँ से, चिमकैँ चिमकावैँ अर इस नै।।
सास्टाङ्ग दँडोती इन कै आग्गै, करदा आप्णा मात्था रगड़ूँ।
सूरज बण कैँ सब नै मेरा, दूर कर्‌या अन्धेरा मति का।

फेर करूँ सूँ मान समर्पित, रामेसर दत सास्त्री जी नै।
भ्याणी आणै पाच्छै जिन नै, बड्डा भाई बण प्यार कर्‌या।।
बखत-बखत पै सुण कैँ दे कैँ, सुझा भोत से कई तह्याँ के।
आसीर्बाद दिया अर नित सै, पढ कैँ गीत्तायन यो सारा।।

२९ ये सैँ मेरे बणे सहायक

कम्पूटर तैँ टैप कराणाँ, जिब हो ह्वया था मुस्कल भोत्तै।
इसै बखत पारासर रिसि से, ऊमासङ्कर पारासर नै।।
सर्धा किरसण, गीत्ता पै रख, थ्यावस तैँ यो काम कर्‌या सै।
थाह्वै स्याम्हीँ गीत्तायन यो, पक्की नौंम खड़्या सै, सिर पै।।
तीन चुबारे धारैँ सज कैँ, खूब असीस्साँ इस बाळक नै।
टाब्बर-टीक्कर सङ्ग भोडिया, मात-पिता नै सुख यो दैवै।।

भाव सात मैँ चन्दा आया, हरस भोत था सब नै होया।
यो के? इत तो राहू बैठ्ठ्या, देख चाँद नै खुस वो हो ह्वया।।

चाँद बिचारा सिमट्या सिकुड़्या, राहू तैँ वो बचणै खात्तर।
इत-उत देक्खै सात गजाँ की, दूरी बैट्ठ्या सूरज दीक्ख्या।।
आँख काढ कैँ पूरण द्रिस्टी, आग बरसदी उस पै गेरै।
राहूमुख पड़ मन्दा चन्दा, घर कै मालिक कान्हीँ देक्खै।।
वो बी देक्ख्या सूरज आग्गै, थर-थर काँप्पै जेठ महीन्ना।
भार्गव रिसि नै प्यारी कोमल, नजराँ तैँ वो देक्ख्या सिस-सा।।
चाँद जिसी अर मेरी पत्नी, एक हार कैँ सुरग सिधारी।
दूज्जी बी या कुसुमकली-सी, गसी पड़ी सै रोग दु:ख तैँ।।
काया मन्दर मैँ जम बैट्ठे, आधि व्याधि के देवाँ की सै।
पूजा करदी चढा दवाई, सुक्र खुदा का, सुक्कर बाब्बा।।
कितणा इस नै ईब बचावै, घर या मेरा खूब सँभाळै।
इस नै बी मैँ धनबाद कहूँ सूँ, ईस्स्वर इस कै रोग मिटावै।।

३० आठ टाबरी भ्याणी होई

भ्याणी आ कैँ छोह्ले छोह्ली, बुद्धिमती ने सात जणे सैँ।
[१]दुर्गातत्त्वप्रकास एक सै, दूरज्जा [२]स्रीसतनारायण व्रत।।
कथा काब्ब्य अर तीज्जी सै या, [३]प्रस्नोत्तररत्नाँ की माळा।
चोत्था सै [४]रिग्बेदकाब्ब्य यो, ग्रन्थ पाँचमाँ लिख्या धर्‌या सै।।
[५]छन्दाँ की गल्ती ठीक करी, सुद्ध करे सैँ मन्तर सारे।
छठा ग्रन्थ यो [६]गीत्तायन सै, ओर सातमाँ [७]गद्य-बिधा मैँ।।
बुला किसन नै आप्णै धोरे, उस नै बुलवा सीद्धी-साद्धी।
लिखी धरी सैँ अर गणपत का, मूस्सा उसकी करै रुखाली।।
देक्खैँ कद यैँ ऊमेस रमेस्सा, इस नै ल्यावैँ थाह्लै स्याम्हीँ।
तीन बड्याँ नै नाम कमाया, दो अर आग्ले गूट्ठा चूस्सैँ।।
एक धर्‌या यो, गोद्दी थाह्ली, ओर सातमाँ 'न्हा कैँ धो कैँ।
सज कैँ आऊँ', करै तयारी, अस्टम ब्रह्मसरोवर गीत्ता।।

[८]ध्वनि-रस-कोमल-पद-युत सय्या, लङ्क्रितिङ्क्रिति-रणन मनोहर।
स्रीसाँवरमल सेठ सुरतिया, लेकर आए दिव्य खजाने।।
ब्रह्मसरोवर तट पर उन नै, पैँठ लगाई दो दिन ताईँ।
तनसुख मनसुख धनसुख सञ्जै, हास्तिनपुर आ इन से मिलियो।।
भ्याणी के भी कुसुमेश्वर शिव-मन्दिर आ कैँ दर्शन करियो।
दिव्य नटेश्वर नन्तशयन के, शङ्खचक्रधृत करयुग आळे।।
नन्दिनि-पोसक-कामदुघा-सह, नन्दीश्वर कै निकट किसन कै।
नव-निधि स्वामी यक्षराज औ, ब्रह्माण्ड निलय के जड़ चेतन।।
सर्वोदर पूरण करणी सब की, माता श्रीअन्नपूरणा के।
यो भी हिन्दी काव्य लिये आ, नव शैली रस रङ्ग सँजोए।।
उदित शीघ्र अब होगा सब को, चैत चाँदनी लिये मधुर-सी।
गगन सदन को भासित करता, इन नै सब नै प्यार करो थम।।
चाल्ल्या मैँ तो ओर घण्याँ की, सेवा पाणी करणी जो सै।
फाग्गण सुदि की गोबिँद-बारस, वर्ष तिहत्तर बिक्रम का सै।।
एक फर्वरी सतरा ईस्वी, घर इक्किस उणचास-पचासा।
सेक्टर तेरा, हुडा, भिवानी, भारत के हरियाणा मैँ।।
पिन है बारा सत्तर इक्किस, चल-भासी सङ्ख्या मेरी न्यूँ सै।
नो, इक्तालिस ओर उण्हत्तर, सात, सात फिर तीन, निनाणवैँ।।
सिवनारायण का पता यही, ग्रन्थ बिसै मैँ सम्पर्क करैँ।
घणी क्रिपा या थाह्ली होगी, इस तैँ मन्नै उत्साह मिलैगा।।

फागण सुदी बारस,
२०७३ बिक्रमी, ९-३-२०१७।
२१४९-५०, सैक्टर-१३, हुडा,
भिवानी-१२७०२१ (हरियाणा, भारत)
चल दूरभाष-९४१६९७७३९९

सविनय
शिवनारायण शास्त्री